चकमक

सितम्बर, 1996 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00

सम्वित महापात्र, विनायकपुर, नवागढ़ (उड़ीसा)

अनुरुचि पांडे, सातवीं, जाखनदेवी, अल्मोड़ा (उ.प्र)

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-12 अंक-3 सितम्बर, 1996
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
दुलदुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पाँच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : *563380*

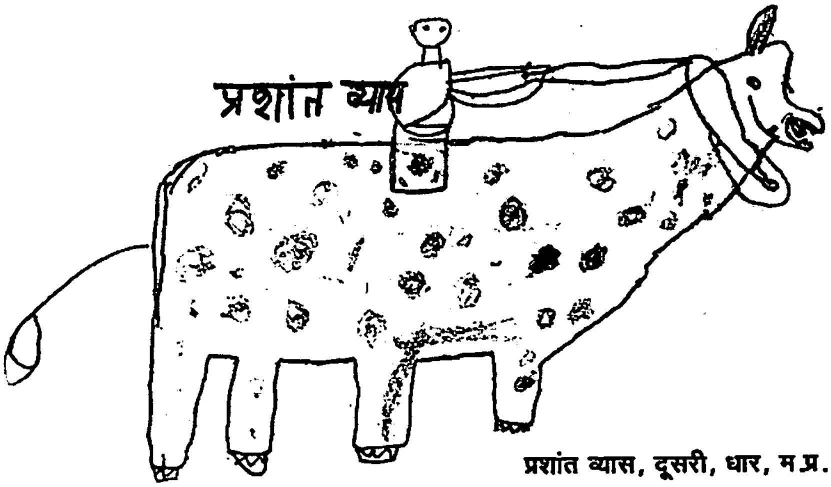

प्रशांत व्यास, दूसरी, धार, म.प्र.

133 वें अंक में.....

नाटक

11 ❑ नन्हा नकलची

कविताएँ

23 ❑ छतरी
33 ❑ कहाँ गए वो दिन?

धारावाहिक

34 ❑ क़िस्सा-बुरातीनो का : 4

हर बार की तरह

3 ❑ मेरा पन्ना
22 ❑ हमारे वृक्ष -53 : ओक
28 ❑ माथापच्ची

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं
9 ❑ एक मज़ेदार खेल
24 ❑ तुमने बनाए चित्र
30 ❑ खेल काग़ज़ का
39 ❑ टिटहरी छत पर

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

चकमक का जून, 96 अंक पढ़ा। इसमें प्रकाशित जाँच आसपास की, चूहा-वानर-हाथी, किस्सा बुरातीनो का, आदि रचनाएँ अच्छी लगीं। चकमक में दिनों दिन निखार आता जा रहा है। मैं लगभग चार-पाँच वर्षों से चकमक पढ़ रहा हूँ। इसका हर अंक अच्छा रहा है। आशा है आप आगामी अंकों में कहानियाँ और विज्ञान के बारे में अच्छी - अच्छी रचनाएँ प्रकाशित करेंगे!

❑ उमेश समरथ, आठवीं, छोटे डोंगर, बस्तर, म.प्र.

चकमक के जून अंक के आवरण पर पानी की किल्लत को मद्देनजर रखते हुए शिवेन्द्र पांडिया ने जो चित्र बनाया उसके लिए वो बधाई के पात्र हैं। जून के माह में पीने के पानी की समस्या सभी जगह आती है। भीतर के पृष्ठों में 'जाँच आसपास की' लेख भी अच्छा लगा।

जुलाई अंक में 'जीवाश्म' पर अच्छी जानकारी मिली। चकमक क्लब के बच्चे लैम्प शैड बना रहे हैं।

क़िस्सा बुरातीनो का धारावाहिक गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामों से ज़्यादा पसन्द किया जाएगा। धारावाहिक का दूसरा भाग बच्चों को काफी अच्छा लगा। विशेषकर बच्चों को उसकी नाक अच्छी लगती है। वे उसकी नाक के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं।

❑ दामोदर शर्मा, पीपरीपूठ, ग्वालियर, म.प्र.

चकमक का जुलाई अंक बहुत अच्छा लगा। इसमें खेल खेल में संगीत मण्डली लेख से सभी बच्चे संगीत से जुड़ सकते हैं।

❑ स्वपनिल 'सपन' जैन, बाकल जबलपुर, म.प्र.

जीवाश्मों के बारे में बहुत अच्छी जानकारी मिली। बार-बार पढ़ने का मन करता है।

❑ मोहम्मद मोहसिन खान, नर्मदा नगर, खंडवा, म.प्र.

चकमक अपनी नित्य निखरी साज-सज्जा के साथ नियमित मिल रही है। जुलाई अंक में फॉसिल की करोड़ों साल पुरानी कहानी मनोरंजक ही नहीं उपयोगी ज्ञानवर्धक भी है। कवर चित्र तो चमत्कारिक है। प्रथम दृष्टि में मैंने तो उसे आज का प्रिन्टेड, छींटदार कागज़ का चित्र समझा। मध्य प्रदेश फॉसिल का खजाना है। मेरे पास भी तीन भारी - भारी वृक्ष के फॉसिल्स हैं। फॉसिल बहुत ज्ञानवर्धक है। मुझे लग रहा है कि इसे दो अंकों में निकाला जा सकता था और कुछ और स्पष्ट समझाते हुए। सुधा जी की 'सूरज की छुट्टी' बहुत अच्छी है। सुधा जी स्वभाव की भी बहुत सरल थीं। उनका अभाव तो अखरेगा ही।

'क़िस्सा बुरातीनो' की रोचकता पर कुछ कहना तो छोटे मुँह बड़ी बात हो जाएगी।

❑ शंकुतला सिरोठिया, इलाहाबाद, उ.प्र.

जुलाई, 96 का अंक हर्षित करने वाला था। ख़ासकर मुझे 'एक कहानी करोड़ों साल पुरानी' बहुत अच्छी लगी। इस अंक को देखकर मैंने दो-तीन लैम्प शेड बना डाले।

❑ सचिन, चौहान, खण्डवा, म.प्र.

मैं चकमक पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। आपके द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका निश्चय ही बालक-वर्ग के लिए अति महत्वपूर्ण है, किन्तु पत्रिका की उपलब्धता शहरी अंचल से ग्राम्य अंचल में कम है।

पत्रिका का स्थायी स्तम्भ 'माथापच्ची' बेहद आकर्षक है। गणितीय समस्याओं का समाधान विस्तार में प्रस्तुत करें, तो बेहतर होगा।

❑ अरविन्द राजौरिया, रनेह, दमोह, म.प्र.

जुलाई में 'सूरज की छुट्टी' कहानी बहुत पसन्द आई। मैंने एक कविता लिखी है-

चकमक मुझको बहुत है भाता
महिने में एक बार ही आता
चकमक करवाता इन्तज़ार
चकमक से मुझको प्यार।

❑ कृष्णपाल टेलर, दौर्दा, मुरैना, म.प्र.

वैसे मैं चकमक नियमित रूप से पढ़ती रही हूँ। पर जुलाई अंक का मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक लगा। सभी कविताएँ सुन्दर थीं और जीवाश्म की जानकारी भी अच्छी लगी।

❑ सुस्मिता जिनेश, भोपाल, म.प्र.

आपकी पत्रिका सुन्दर निकल रही है। उसमें कुछ भी कमी तो नहीं देख पा रहा हूँ। मैं इसके निरन्तर प्रगतिशील होने की शुभकामना करता हूँ।

❑ एस.के. सामरिया, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

मुझे जुलाई, 96 अंक बहुत अच्छा लगा। आपने इस अंक में जीवाश्म के बारे में जानकारी दी है। मुझे तो उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। मैंने चकमक पढ़कर कुछ थ्यौरी ज्ञान प्राप्त कर लिया है। आप चकमक समाचार हर माह दें।

❑ कैलाश हरियाले, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

मैं चकमक को बहुत अच्छी तरह से पढ़ता हूँ। चकमक में नई चीज़ें जानने को मिलती हैं। क़िस्सा बुरातीनो का बहुत अच्छा लगा और रोचक भी।

❑ विपिन कुमार साकेत, चक्रमाठी, रीवा, म.प्र.

जुलाई, 96 का चकमक मिला। बहुत अच्छा लगा। इसमें 'एक कहानी : करोड़ों साल पुरानी' बेहद पसन्द आई। कविताएँ एवम् 'सूरज की छुट्टी' कहानी अच्छी लगी।

❑ विनोद पाठक, नांदेड़, उज्जैन, म.प्र.

चकमक आपको कैसी लगती है - अपने विचार भेजें।

चाय बनाई

एक बार मैंने चाय बनाई। फिर मैने अपनी मम्मी और पापा को पिलाई। मम्मी ने मुझे कहा, ''वाह! तुम तो बहुत अच्छी चाय बनाती हो।''

पर असल में उसमें बहुत सारी चाय की पत्ती थी। दूसरी बार मेरे घर पर मेहमान आए हुए थे। तब मैंने चाय पत्ती की जगह काला नमक डाल दिया।

■ भारती भसीन, चौथी, जयपुर, राजस्थान

कबूतर

भले कबूतर
चले कबूतर
बड़े प्यार से
पले कबूतर

जुड़े कबूतर
मुड़े कबूतर
आसमान में
उड़े कबूतर

इधर कबूतर
उधर कबूतर
जाने कब हैं
किधर कबूतर

■ पायल महाजन, सातवीं, फरीदाबाद, हरियाणा

सींग टूटा

कुछ दिनों पहले की बात है। गर्मी की छुट्टी में मेरे पापा मेरे मामा जी के यहाँ से एक बकरी लाए। मुझे बकरी चराने का बहुत शौक है। मैं अकेला ही बकरी गाँव से कुछ दूर चराकर ले आता। मेरा एक दोस्त मुझसे आकर बोला, ''कल हम दोनों बकरी चराने साथ चलेंगे।''

मैंने हाँ कर ली। कल होते ही हम साथ बकरी चराने गए। कुछ दूर गए होंगे कि बकरियों का युद्ध छिड़ गया। हम दोनों दोस्त इस युद्ध को बड़े मज़े से देख रहे थे। दोनों के मन में यही बात थी कि किसकी बकरी जीतेगी। अचानक मेरी बकरी का सींग टूट गया। बकरी के सिर से खून निकल रहा था। यह देखकर मैं ज़ोर से रोने लगा। मुझे देखकर मेरा दोस्त भी रोने लगा।

मेरी मम्मी ने यह सब देखा तो मुझे दो–तीन चाँटे जमा दिए और कहा, ''सींग रोने से अच्छा नहीं होगा, इलाज कराने से अच्छा होगा।''

■ विनोद प्रजापत, दसवीं, नाँदेड़, उज्जैन, म. प्र.

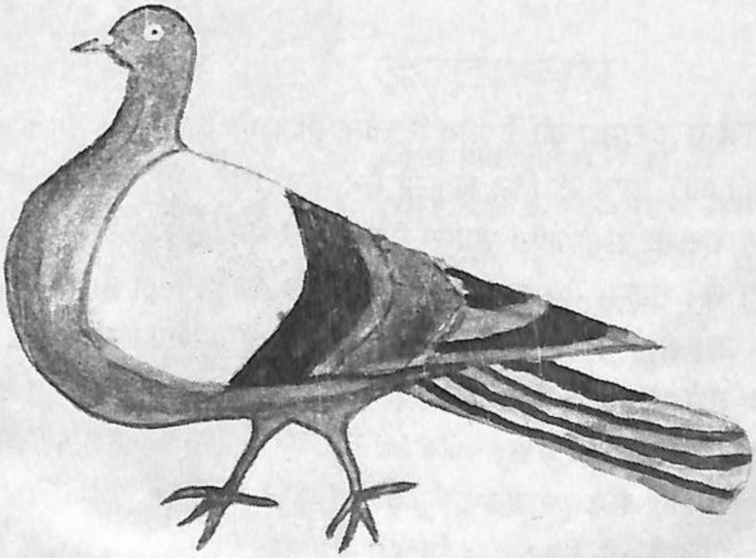

■ भवानी शंकर, सातवीं, भिलावट, अजमेर, राजस्थान

मेरापन्ना

मेरा कुत्ता

कुछ दिन पहले की बात है। मेरे पापा एक पामेरियन कुत्ता लाए। वह बहुत अच्छा था। उसका नाम हमने जिप्सी रखा था। उसे हम शाम को लाए थे। पहले वह घबरा रहा था, फिर उसकी हमसे दोस्ती हो गई। वह रात में भी रोया नहीं था। हमारे घर में बहुत बड़ा बगीचा है वह दिन भर वहीं गेंद से खेलता रहा। शाम को हमने उसे नहलाया और घुमाने ले गए। रात को मेरी बहन ने उसकी जंजीर खोल दी, वह इधर-उधर घूमने लगा। तभी उसे कोई उठा ले गया। हमने अड़ोस-पड़ोस की कालोनियों में भी ढूँढा पर वह नहीं मिला, इस बात का मुझे दुख है।

■ कपिल मंगोदिया, बारह वर्ष, धार, म.प्र.

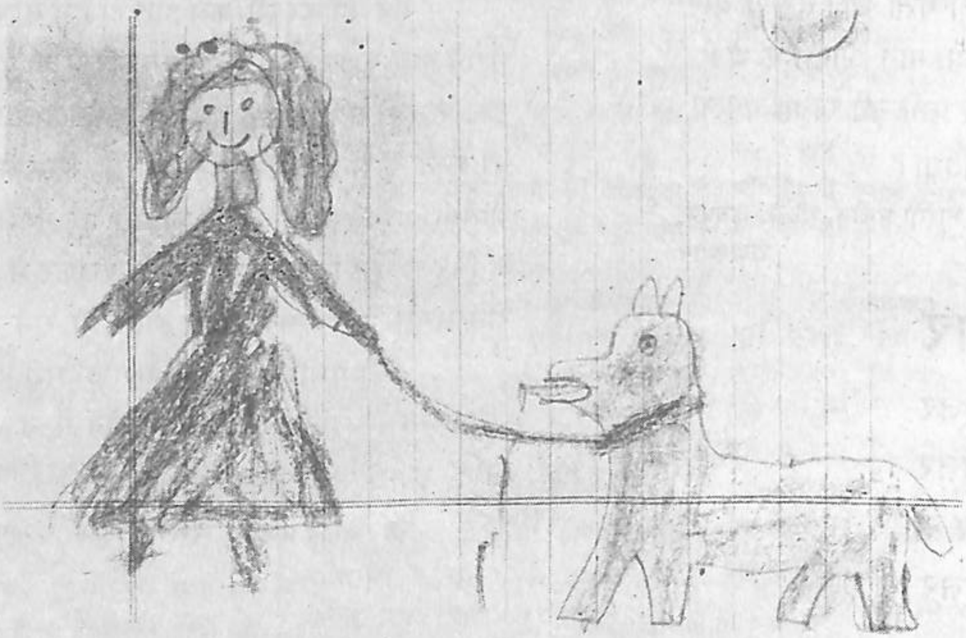

■ प्रीति राजपूत, आठ वर्ष, लखनऊ, उ.प्र.

सर्कस

बात उस समय की है जब मैं तीन साल का था। उस समय हमारे शहर उज्जैन में सर्कस लगा हुआ था। और ठण्ड के दिन थे। तो मैंने पेन्ट, शर्ट और शाल पहने थे। और सर पर टोपी पहन रखी थी। हम घर के सभी लोग सर्कस देखने चले गए। हम सभी लोग सर्कस में सबसे आगे वाली सीट पर बैठे हुए थे। सर्कस में खेल दिखाने के लिए सबसे पहले हँसाने वाले दो जोकर आए। वह आपस में ज़ोर – जोर से बातें करने लगे, लोगों को हँसाने के लिए। उनमें एक जोकर ने दूसरे से बात करते हुए कहा कि तुझे मालूम है मेरे पापा भी यहाँ पर सर्कस देखने आए हैं। तब दूसरे ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, तेरे पापा कहाँ हैं? तब पहले जोकर ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा , देख वो रहे मेरे पापा, टोपी पहनकर और शाल ओढ़कर बैठे हैं कुर्सी पर। तब सभी दर्शक मेरी तरफ देखकर हँसने लगे और पूरे सर्कस में तालियों की लहर दौड़ पड़ी।

■ आशिफ खान, ग्यारहवीं, उज्जैन, म. प्र.

मेरा पन्ना

सोफ़्टीवाला

■ वर्षा कहार, सातवीं, पिपरिया, होशंगाबाद, म. प्र.

एक बार एक सोफ़्टीवाला जा रहा था। मैंने पूछा,''भैया सोफ़्टी कितने की दे रहे हो?''

भैया ने कहा, ''एक रुपए की।''

मैंने कहा, ''यहाँ तो ये सब सोफ़्टीवाले दो रुपए की देते हैं।''

भैया ने कहा, ''अब मैं भी दो रुपए की सोफ़्टी दूँगा।''

दो साल बाद वह बूढ़ा हो गया। मैंने उसे पहचाना ऐसे कि जब उसने मुझे एक रुपए की सोफ़्टी दी थी तब उसके माथे पर एक लकीर थी। इससे ही मैंने उसे पहचाना।

■ दिवान्शु भसीन, तीसरी, जयपुर, राजस्थान

■ मुक्ति अग्रवाल, छठवीं, होशंगाबाद, म. प्र.

इन्द्रधनुष

देखो इन्द्रधनुष है आया
सात रंगों की बौछार ये लाया
लाल हरा पीला नीला रंग
हम सबको है भाया
देखो इन्द्रधनुष है आया
जब भी बादल आते हैं
अपने साथ इन्द्रधनुष लाते हैं
देखो इन्द्रधनुष है आया
सबके मन को भाया

■ ज्योति शर्मा, धार, म. प्र.

मेरा पन्ना

पेड़

मेरे घर के सामने एक पेड़ था। मैं उसे रोज़ देखती थी। पेड़ के उस पार एक और मकान है। वह मकान मेरी सहेली का है। हम दोनों घण्टों उस पेड़ के नीचे खेलते थे। उस पेड़ के फल भी खाते थे। वह पेड़ मेरी दादी ने बहुत साल पहले लगाया था, जब मैं बहुत छोटी थी। वह पेड़ हमें हवा देता और धूप के समय छाया देता था।

एक बार गर्मियों की छुट्टियों में मैं और मेरी सहेली अपने–अपने परिवार के साथ छुट्टियाँ मनाने लद्दाख गए। वहाँ हमने बहुत मज़ा किया। वहाँ से हमने एक झूला ख़रीदा जिसे पेड़ पर लटकाकर झूला जाता है। यह झूला हमने अपने पेड़ के लिए ख़रीदा था। पर हम लोग जब घर लौटे तो देखा कि वह पेड़ कट चुका है। पूछने पर पता चला कि वहाँ रास्ता बनने वाला है इसलिए वह पेड़ काट दिया गया है। हमें बहुत दुख हुआ। तब हमने सोचा कि हर साल हम एक पेड़ लगाएँगे जिसके नीचे बैठकर हम खेल सकें और ताज़ी हवा हमें प्राप्त हो सके।

■ **अर्चना करमाकर, चौथी, बिलासपुर, म. प्र.**

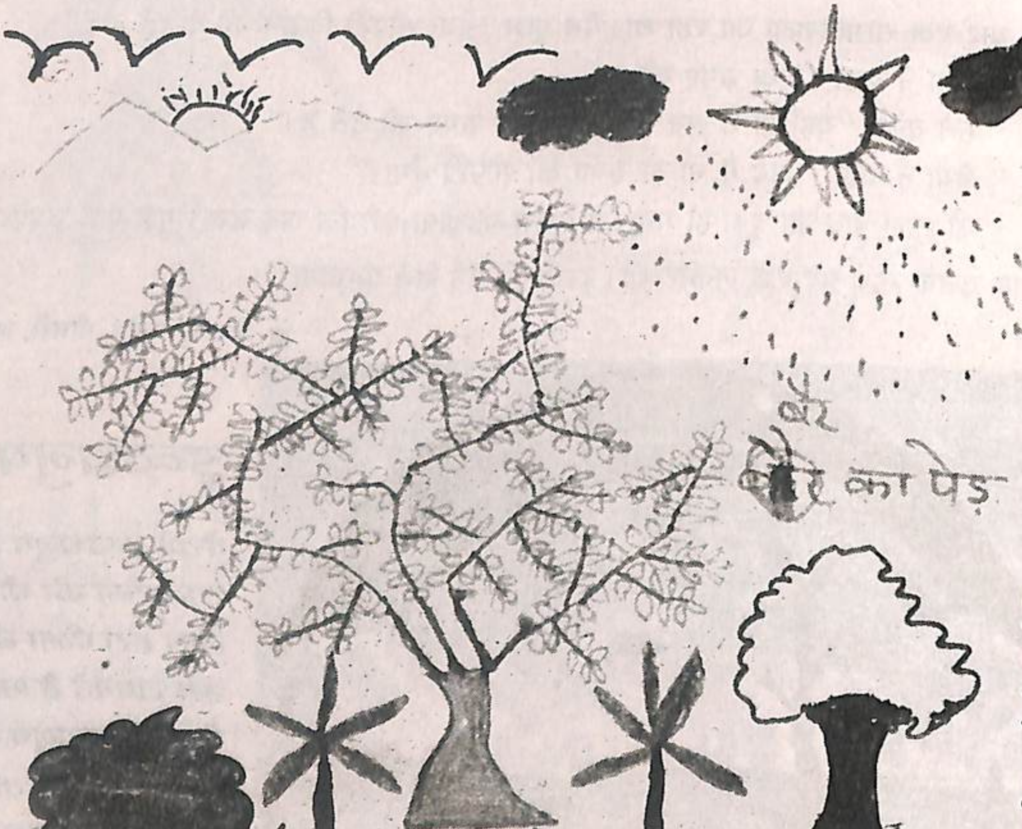

■ बलराम पाटीदार, पाँचवीं, नालीखेड़ा, मन्दसौर, म. प्र.

मेरा पन्ना

तितली

तितली बेचारी चुप नहीं रहती
फूलों पर हर दम महकती
पास चलो तो डरकर भागती
दूर चलो तो महकती रहती
पंख देखो तो इतने प्यारे
काले पीले नीले हरे
जब जब तितली फूलों पर जाती
सबका मन बहलाती है
जब बच्चे उसे पकड़ लेते तो
पंख फड़फड़ाकर गिर जाती है

■ हर्षित मण्डावी, सातवीं, गुदमा, बस्तर, म. प्र.

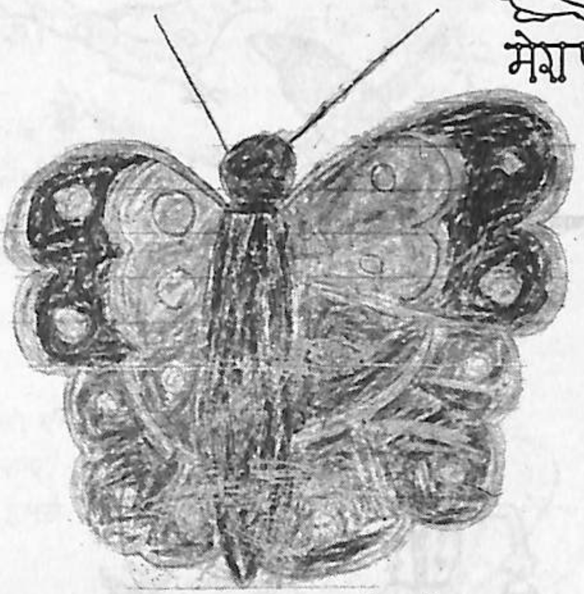

■ रेखा, दूसरी, नदीपार, मुरार

बरसात का मौसम

■ मोनिका शेरचन, आठवीं, न्यूटन चिखली, छिंदवाड़ा, म. प्र.

बच्चों और बड़ों के मुख पर है
खुशहाली
बरखा के कारण चारों ओर छाई
हरियाली
नदी और नाले बड़े ज़ोर से खर्राए
मेंढक भैया अपनी तान में टर्राए
चारों तरफ पानी की है बहार
बच्चों को पानी से बहुत है प्यार
प्रकृति का हम पर बड़ा ही उपकार
जल के बिना जीवन ही होता बेकार
पानी की चारों तरफ एलमपेल है
गली मोहल्लों में पानी की ठेलमठेल है
कलकल पानी बढ़ने का सन्देश सुनाता
तुमको नमन हम करते हैं प्रकृति माता

■ देवेन्द्र सिंह कुशवाह, अतरसूमा
भिण्ड, म. प्र.

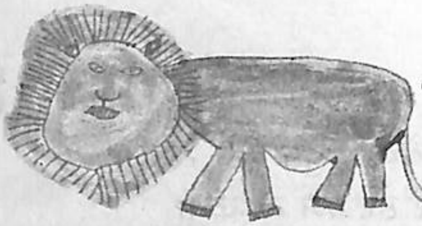

प्रमोद वर्मा, पहली, महिदपुर, उज्जैन, म.प्र.

पुष्पम, हाजीपुर, बिहार

अखिला, पाँचवी, रोहतक, हरियाणा

अंकिता जैन, चौथी, जबलपुर, म.प्र.

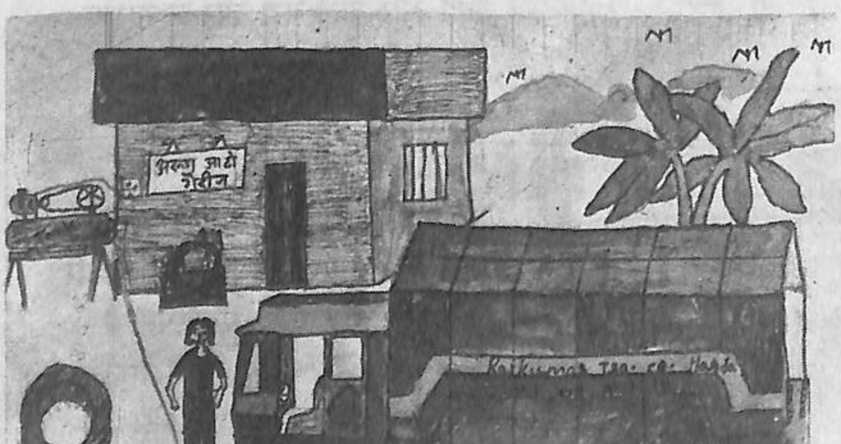

राजेश भागरे, मसनगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.

अभिषेक जैन, पहली, बीना, म.प्र.

एक मज़ेदार खेल

खेल अंकों का

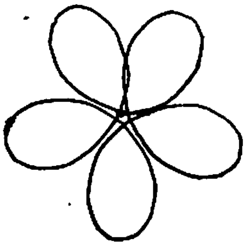

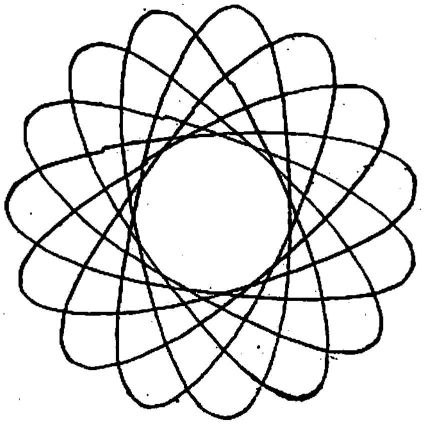

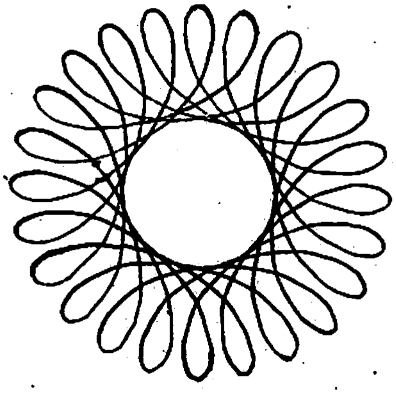

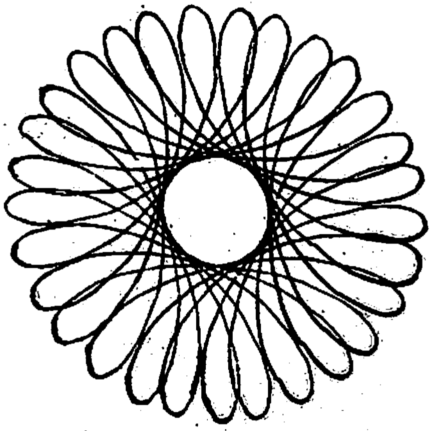

स्कूल खुल गए। और स्कूल जाने वाले बच्चे फिर पढ़ाई के बोझ तले दबने लगे। जब मैं स्कूल में पढ़ती थी तो गर्मी की लम्बी छुट्टियाँ काटने के बाद स्कूल खुलने का बेसब्री से इन्तज़ार तो रहता था। पर स्कूल खुले एकाध हफ़्ता ही बीत पाता होगा कि मैं पढ़ाई और होमवर्क के खौफ़ से घिरने लगती थी। सबसे बड़ा हौवा था गणित का। क्या तुम्हें भी गणित कठिन और डरावना लगता है?

इस खौफ़ से बचने के लिए क्या किया जाए? चलो एक खेल खेलें ताकि अंकों, संख्याओं आदि से थोड़ी दोस्ती हो जाए? शायद इस तरीक़े से हम इन्हें कुछ समझने लगें। और शायद इससे गणित समझने में कुछ मदद मिले।

कोई साज़ोसामान की ज़रूरत नहीं हैं इस खेल में। बस अपनी मित्र-मण्डली इकट्ठी कर लो। कागज़ और कलम भी रख लो साथ। सारे दोस्त मिलकर हाथ पकड़कर एक गोला बनाओ और अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाओ। किसी एक दोस्त से शुरू करके सब अपने आपको क्रम से एक-एक नम्बर दे दो।

अब असली खेल शुरू करते हैं। एक रूमाल या फूल या ऐसी ही कोई चीज़ ले लो, अपने बीच घुमाने के लिए। अब एक नम्बर का खिलाड़ी कोई भी एक अंक चुन ले। मान लो तुम दोस्तों की कुल संख्या है 16 । और उसने अंक चुना 2 । तो वह रूमाल या फूल को अपने पड़ोस में बैठे साथी को छोड़कर अगले साथी को देगा। यानी अपने से दूसरे साथी को। इसी तरह सभी रूमाल को अपने पड़ोसी के बगल में बैठे साथी को देते जाएँगे। यानी खेल 1 से शुरू करें तो रूमाल की चाल होगी : 1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 1, 3, 5 ....

यानी कुछ साथियों के हाथ में रूमाल आएगा ही नहीं। पर यह तो अपन चाहते नहीं हैं न, कि कुछ दोस्त खेल से छूट जाएँ। तो हमें कोई ऐसा अंक ढूँढना होगा कि रूमाल घूम-फिरकर सबके पास आए। क्यों न इसके लिए 3 को चुनें। यानी अब रूमाल हर तीसरे दोस्त के पास जाएगा - उचक-उचककर दौड़ेगा! अब इसकी चाल होगी : 1, 4, 7, 10, 13, 16, 3, 6, 12, 15, 2, 5, 8, 11, 14, 1, 4, ...

यह हुआ न कमाल। तीन चक्करों में रूमाल ने ऐसा सफर तय किया कि सबके हाथों में से खेलते हुए गुज़रा। क्या और भी ऐसे

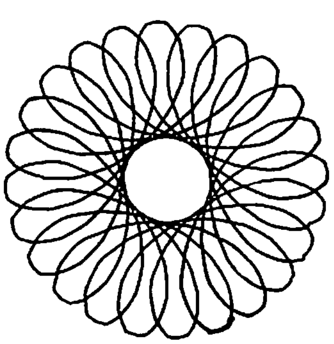

अंक होंगे? आज़माकर देखो। 4, 5, 6, 7 ...... से 15, 16 तक सारी संख्याओं को बारी-बारी चुनकर यही चक्कर चलाओगे तो तुम्हें संख्याओं के दो समूह मिल जाएँगे। एक वे जिन्हें चुनने पर सब दोस्त खेल में शामिल हो पाते हैं। और दूसरे वे जिन्हें चुनने पर हर बार कुछ दोस्त बचे रह जाते हैं।

ज़रा इन दो समूहों को ग़ौर से देखो। क्या कोई ख़ास बात नज़र आती है तुम्हें? 16 की कुल संख्या के लिए बने दो समूह ऐसे होंगे-

इन संख्याओं से सब दोस्त खेल पाए : 1,3,5,7,9, 11,13,15 **और** इन संख्याओं से खेलने पर कुछ दोस्त छूट गए : 2,4,6,8,10,12,14

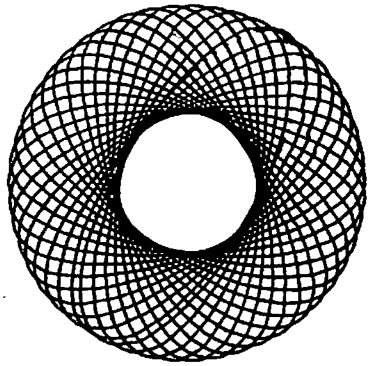

एक बात तो साफ़ दिखाई पड़ रही है कि एक समूह की सारी संख्याएँ सम हैं और दूसरे की सभी विषम। इसके अलावा और कुछ?

16 ख़ुद तो सम संख्या थी। अब एक विषम संख्या लेकर देखते हैं। तुम में से एक खिलाड़ी खेल से अलग हो जाए। यह खिलाड़ी हिसाब-किताब रखने का काम करेगा। और बाक़ी 15 फिर वही खेल दोहराओ। इस बार कुछ ऐसे समूह बने क्या?

जिन संख्याओं से सब दोस्त खेल पाए : 1,2,4,7,8,

11,13,14 **और** जिन संख्याओं से खेलने पर कुछ दोस्त छूट गए : 3,5,6,9,10,12

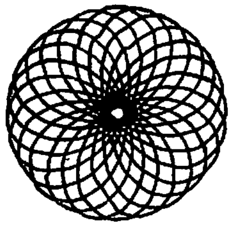

इस बार दोनों समूहों में कुछ मिली-जुली संख्याएँ आईं, है ना। चलो हम ही बता दें कि माजरा क्या है। यहाँ ख़ास ध्यान देना होगा खिलाड़ियों की कुल संख्या और पहले नम्बर के खिलाड़ी द्वारा चुनी गई संख्या पर। अगर यह जोड़ी ऐसी हुई कि कोई संख्या दोनों को पूरा-पूरा भाग दे सकती है या ऐसी कि बड़ी संख्या छोटी की गुणज है, तो खेल में सब भागीदार नहीं हो पाएँगे। उदाहरण के लिए 16 और 6 की जोड़ी ले लो। इन दोनों संख्याओं को 2 पूरा-पूरा भाग दे देगी। यानी खेल नहीं जमेगा। ऐसी ही एक और जोड़ी है 15 और 10 की। दूसरे तरह की जोड़ी का उदाहरण है 16 और 2, या 15 और 3। इनमें बड़ी संख्या छोटी की गुणज है। इसलिए यहाँ भी बात नहीं बनेगी। पर यह जोड़ी अगर ऐसी हुई कि न तो वे आपस में एक-दूसरे के गुणज या भाजक हैं और न ही कोई एक भी ऐसी संख्या है जो दोनों को पूरा-पूरा भाग कर दे, तो खेल बढ़िया जमेगा। यानी रूमाल घूम फिरकर सबके हाथों में पहुँच जाएगा।

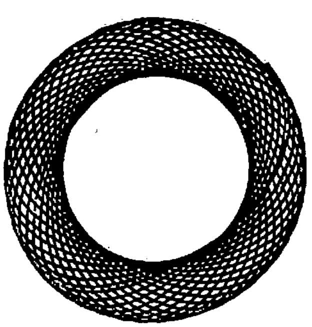

यह खेल नई संख्याओं के साथ खेलने के लिए तुम दो या तीन समूहों में बँटकर भी खेल सकते हो। और आखिर में एक बात और। इस खेल के आधार पर ही यहाँ बनी मज़ेदार चित्रकारी की गई है। कैसे? यह तुम ख़ुद ही सोचो।

नाटक

नन्हा नकलची

□ मिशियो कातोह

पात्र परिचय

नन्हा नकलची : दूसरों को छकाने वाला एक बच्चा।
चार अन्य बच्चे। जिनमें से कोई एक मूँगफली बेचने वाला बन जाए।

(संगीत/एक लड़का बाईं तरफ से मंच पर आता है। उसके पीछे-पीछे नन्हा नकलची आता है जो लड़का 1 की नकल करके चलता है।)

लड़का 1 : *(अचानक रुककर और पीछे देखकर)* ए, क्या कर रहे हो?
नन्हा नकलची : *(लड़का 1 की तरह ही मुड़कर)* ए, क्या कर रहे हो?
लड़का 1 : अजीब लड़का है।
नकलची : अजीब लड़का है।
(अन्तराल)
लड़का : *(फिर चलने लगता है)* जो मन में आए करो।
नकलची : *(उसके पीछे चलकर)* जो मन में आए करो।
लड़का 1 : तुम हमेशा दूसरों की नकल करते हो?
नकलची : तुम हमेशा दूसरों की नकल करते हो?
लड़का 1 : तुम चाहते क्या हो?

नकलची : तुम चाहते क्या हो?

लड़का 1 : तुम मुझे परेशान कर रहे हो।

नकलची : तुम मुझे परेशान कर रहे हो।

लड़का 1 : मैं तुम्हें एक घूँसा मारूँगा।

नकलची : मैं तुम्हें एक घूँसा मारूँगा।

लड़का 1 : मारकर दिखाओ।

नकलची : मारकर दिखाओ।

(लड़का 1 नकलची के सिर पर घूँसा मारता है। नकलची उसे ज़ोर से मारता है। लड़का 1 रोने लगता है।)

लड़का 1 : हाय ... हाय *(रोता हुआ, दुबककर बाहर जाता है।)*

नकलची : हा ... हा ... हा ...। मज़ा आ गया। आखिर रो दिया न ...। आज यह मेरा पाँचवाँ शिकार है। वाह, वाह। क्या बात है? नकल करने में इतना मज़ा क्यों आता है? *(दर्शकों से)* मैं यहाँ नन्हा नकलची के नाम से मशहूर हूँ। मैंने मन को बहलाने के कई तरीक़े आज़माए लेकिन किसी में मज़ा नहीं आया। मैं जो भी करता था उसका परिणाम होता था असफलता। लोग मुझ पर हँसते थे। इसलिए यह दुनिया मुझे बोर लगने लगी। लेकिन जब से मैंने लोगों की नकल उतारना शुरू किया है, ज़िन्दगी मज़ेदार हो गई है। कोई लड़का अपने को कितना ही बहादुर समझे, अगर वह नकलची के हाथ आ जाता है तो वह ज़रूर अन्त में छोटे बच्चों की तरह रोने लगता है। जब मैं उन्हें बच्चों की तरह रोते देखता हूँ तो मुझे सचमुच बड़ा मज़ा आता है। लेकिन रोने की मैं नकल नहीं करता क्योंकि रोने से दिल दुखी हो जाता है। रोने से सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है। ... आप जानते हैं लोगों की नकल करना बहुत मुश्किल काम है। इस बात की सावधानी रखनी पड़ती है कि दूसरा जो भी कहे उस पर गुस्सा न आए। जब मैं नकल करने लगता हूँ तो दूसरा आदमी जल्दी या देर से यह बात भूल जाता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह उसकी नकल मात्र है और वह मेरी बातों को गम्भीरता से लेने लगता है। अगर वह गुस्से में भी आ जाए तो भी मुझे शान्त रहना होता है ताकि मैं अन्त तक उसकी नकल करता रहूँ। सफल नकलची बनने के लिए यह बहुत ज़रूरी है। अगर दूसरों की बात में ज़रा भी फँस गए तो खेल खत्म समझो। नकल की सारी कोशिश बेकार हो जाएगी ... अब मैं अपना 'नन्हा नकलची गाना' गाऊँगा और किसी नए शिकार की प्रतीक्षा करूँगा।

(संगीत। नकलची अपनी जेब से छोटी डफली निकालकर मज़ेदार गाना गाने और नाचने लगता है।)

नकलची : मैं हूँ बड़ा नन्हा नकलची ....
नन्हा नकलची, नन्हा नकलची
दूसरों की नकल करना
यहाँ, वहाँ, हर जगह

घूमना दिनभर,
नाचना और गाना
अपनी डफली को बजाना
हा हा हू ... हा हा हू ...

(दाईं ओर से 'मूँगफली मूँगफली' आवाज़ सुनाई देती है।)

नकलची : *(नाच रोककर और उस आवाज़ की तरफ कान लगाकर)* क्या मौक़ा हाथ लगा है। मूँगफली बेचने वाला लड़का आ रहा है। बहुत मज़ा आएगा। मैं यहाँ छिपकर उसका इन्तज़ार करूँगा।

(नन्हा नकलची मंच के कोने में दूर जाकर बैठ जाता है। मूँगफली वाला दाईं ओर से मंच पर आता है।)

मूँगफली वाला : मूँगफली, मूँगफली।

नकलची : मूँगफली, मूँगफली।

मूँगफली वाला : (पीछे मुड़कर) ए, यह क्या हो रहा है?

नकलची : ए, यह क्या हो रहा है?

मूँगफली वाला : तुम मूँगफली खरीदना चाहते हो?

नकलची : तुम मूँगफली खरीदना चाहते हो?

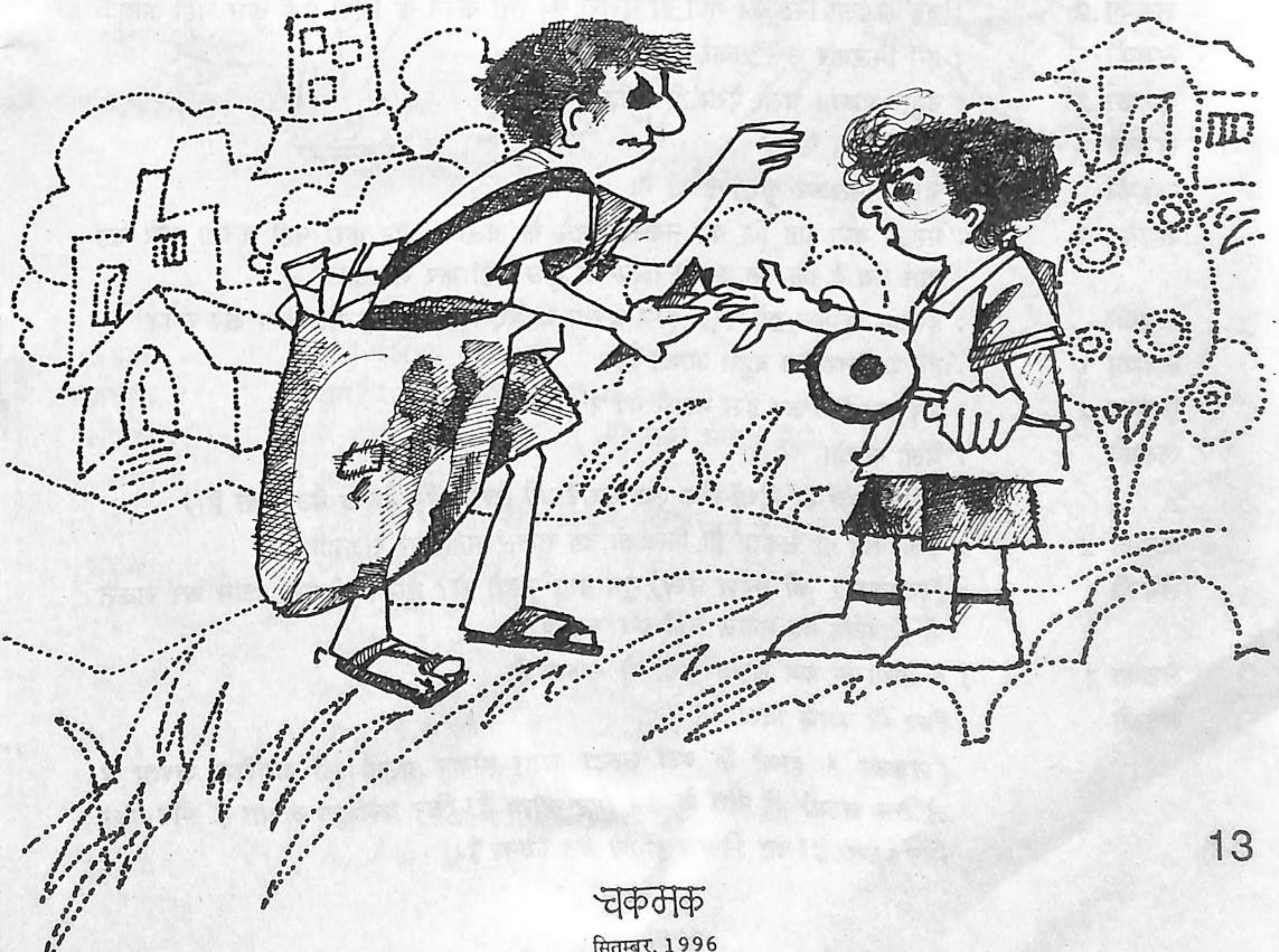

मूँगफली वाला : तुम मेरी बात को क्यों दुहरा रहे हो?
नकलची : तुम मेरी बात को क्यों दुहरा रहे हो?
मूँगफली वाला : मुझे बेवकूफ़ मत बनाओ।
नकलची : मुझे बेवकूफ़ मत बनाओ।
मूँगफली वाला : यह तो सचमुच वाहियात लड़का है।
नकलची : यह तो सचमुच वाहियात लड़का है।
मूँगफली वाला : बकवास बन्द करो।
नकलची : बकवास बन्द करो।

(मूँगफली वाला बाईं ओर चलता है। नन्हा नकलची उसका पीछा करता है।)

मूँगफली वाला : मूँगफली, मूँगफली।
नकलची : मूँगफली, मूँगफली।
मूँगफली वाला : मूँगफली, मूँगफली।
नकलची : मूँगफली, मूँगफली।

(दोनों लड़के बाईं ओर पर्दे के पीछे चले जाते हैं लेकिन उनकी आवाज़ें आती रहती हैं। बाईं ओर से तीन बच्चे आते हैं।)

लड़का 2 : वह लड़का बिल्कुल गधा है। दूसरों को तंग करने के सिवा उसे कुछ नहीं आता।
लड़की : हमें मिलकर उसे सज़ा देनी चाहिए।
लड़का 2 : बहुत अच्छा। चलो ऐसा ही करते हैं।
लड़का 1 : हाँ, लेकिन कैसे?
लड़की : चलो, मिलकर कुछ सोचते हैं।
लड़का 2 : पहली बात यह कि वह नकल करने के अलावा और कुछ नहीं करता और यह बात तय है कि वह अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कर सकता।
लड़की : इसका मतलब हमें ऐसा काम करना चाहिए जिसकी वह नकल न कर सके।
लड़का 1 : हाँ, यह तरकीब बहुत अच्छी है।
लड़का 2 : हम सब मिलकर इस मसले पर सोचें।
लड़की : चलो सोचो।

(तीनों मंच के बीचों-बीच एक दूसरे की तरफ़ मुँह करके बैठ जाते हैं।)

लड़का 2 : ऐसा क्या हो सकता है। जिसकी वह नकल नहीं कर सकता।
लड़की : *(लड़का 1 की तरफ देख)* तुम क्या कहते हो? तुम कोई ऐसा काम कर सकते हो जिसकी वह नकल नहीं कर सकता?
लड़का 1 : मैं हाथों के बल उल्टा खड़ा हो सकता हूँ।
लड़की : फिर भी करके दिखाओ।

(लड़का 1 हाथों के बल उल्टा खड़ा होकर चलने की कोशिश करता है लेकिन जल्दी ही पीठ के बल गिर जाता है। फिर कोशिश करता है और फिर गिर जाता है। वह निराश होकर बैठ जाता है।)

लड़का 2	: यह तो नहीं चलेगा।
लड़की	: नहीं चलेगा।
लड़का 2	: तुम? तुम कुछ कर सकते हो?
लड़की	: मैं मसखरा बन सकती हूँ और नाच सकती हूँ।
लड़का 2	: करके दिखाओ।
	(लड़की मंच के बीच आकर मसखरेपन में नाचती और गाती है।)
लड़की	: जोकर हूँ, मैं जोकर हूँ नहीं किसी की नौकर हूँ उछलूँ कूदूँ नाच दिखाऊँ सबके मन को हर्षाऊँ जोकर हूँ मैं जोकर हूँ नहीं किसी की नौकर हूँ।
लड़का 1	: ***(बीच में टोककर)*** नहीं, इससे काम नहीं चलेगा।
लड़की	: ***(गुस्से से)*** क्यों नहीं?

लड़का 1 : वह लड़का बहुत अच्छा नाचता है। जब आज वह मुझे मिला था तो वह डफली बजाकर नाच रहा था।

लड़का 2 : यह बात? यह तो बुरी ख़बर है।

लड़की : *(वापस आकर बैठ जाती है।)* ऐसी बात है तो जोकर का डान्स भी काम का नहीं होगा।

लड़का 1 : *(लड़का 2 से)* तुम भी तो कुछ बताओ।

लड़का 2 : मैं शराबी के तीन रोल कर सकता हूँ।

लड़की : करके दिखाओ तो।

लड़का 1 : हाँ, हाँ करके दिखाओ।

(लड़का 2 मंच के बीच आता है।)

लड़का 2 : पहले मैं हँसते हुए शराबी की एक्टिंग करूँगा। *(वह गहरी साँस लेता है और उसकी गम्भीर मुद्रा मुस्कान की मुद्रा में बदल जाती है।)* उह ... मैं ... मैं शराबी हूँ ... ऐसा शराबी। मुझे सारी चीज़ें अजीब-अजीब लगती हैं। अजीब, अजीब। मैं अपनी हँसी नहीं रोक सकता हा हा हा हा हो हो हो हो ...

(देखने वाले दोनों बच्चों पर जैसे हँसी सवार हो जाती है, वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते हैं। उसी समय दाईं ओर से रोने की आवाज़ सुनाई देती है।)

मूँगफली वाला : *(पर्दे के पीछे से)* ऊ ... ऊ ... ऊ ... ।

लड़का 1 : *(लड़का 2 से)* क्या तुम रोनेवाले शराबी की एक्टिंग कर रहे हो?

लड़की : नहीं वह तारू है, मूँगफली वाला। वह अपने माता-पिता का कहना मानता है।

(मूँगफली वाला दाईं ओर से रोता हुआ आता है। तीनों बच्चे खड़े हो जाते हैं और उससे मिलने के लिए मुड़ते हैं।)

लड़का 2 : क्या बात है तारू?

मूँगफली वाला : ऊ ... ऊ ... ऊ ....।

लड़की : क्या किसी ने तुम्हें रुलाया है?

(मूँगफली वाला अभी भी रोते हुए, कंधे हिलाता है।)

लड़का 1 : क्या वह डफली वाला नन्हा नकलची था ...?

मूँगफली वाला : हाँ ...

लड़का 2 : अब तो हम उसे ऐसे जाने नहीं देंगे।

लड़की : उसने तारू को भी छेड़ा जो माँ-बाप का आज्ञाकारी बेटा है। यह तो हद है।

लड़का 1 : ठीक, बिल्कुल ठीक।

लड़का 2 : आओ, हम मिलकर सोचें।

लड़की : आओ बैठो। तारू, तुम भी बैठो।

(मूँगफली वाला सुबकता हुआ चुपचाप बैठ जाता है।)

लड़का 1 : क्या तुम्हें पहली बार उसने रुलाया है?

मूँगफली वाला : हाँ ...

लड़का 2	: उसने तुम्हें कैसे रुलाया?
लड़की	: मुझे लगता है उसने तुम्हें पीटा होगा। नहीं?
मूँगफली वाला	: हाँ ... तुम जानते हो वह हमेशा दूसरों की नकल करता है। जब मैंने कहा, "मैं तुम्हें घूँसा मारूँगा।" तो उसने भी कहा, "मैं तुम्हें घूँसा मारूँगा।" मैंने कहा, "मारकर दिखाओ" तो वह भी बोला, "मारकर दिखाओ।" मैंने उसे मारा तो उसने भी मुझे मारा लेकिन बहुत ज़ोर से। ***(वह फिर रोने लगता है।)***
लड़का 1	: मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ।
लड़का 2	: रोना छोड़ो। तारू, यह रोने-धोने का वक़्त नहीं है।
लड़की	: मैं कहती हूँ सब मिलकर उसे ऐसी सज़ा दें कि वह फिर कभी किसी की नकल न करे।
लड़का 1	: तुम्हें रोना शोभा नहीं देता।
	(मूँगफली वाला रोना बन्द कर देता है।)

लड़का 2	: वह हमारी चीज़ की नकल करता है तो उसे सज़ा कैसे दें?
लड़की	: इसका मतलब ऐसा काम सोचो जिसकी वह नकल न कर सके।
लड़का 2	: शराबी के तीन रोल भी काम नहीं करेंगे?
लड़का 1	: नहीं, क्योंकि वह उनकी नकल आसानी से कर सकता है।
लड़की	: आओ, हम नए सिरे से सोचें।
लड़का 2	: हाँ, हाँ ... नए सिरे से सोचें।
लड़का 1	: हाँ ... हाँ नए सिरे से सोचें।
मूँगफली वाला	: *(ताली बजाकर)* मिल गया, मिल गया।
सभी	: *(एक साथ)* क्या मिल गया?
मूँगफली वाला	: ख़ास कुछ नहीं। पहले तो हम चुपचाप खड़े हो जाएँ। फिर अचानक सब कहें, "आहा ..." और आसमान की तरफ इशारा करें। तब वह कुछ न कुछ ज़रूर कहेगा। और जब कहेगा तो हम उसे पकड़ लेंगे। हम सब मिलकर उसकी नकल करेंगे।

लड़का 2 : क्या आइडिया मारा है!

लड़का 1 : हाँ भाई, दाद देनी पड़ेगी।

लड़की : हमारे दिमाग़ में यह बात पहले क्यों नहीं आई?

मूँगफली वाला : देखो, वह आ रहा है।

(नकलची के गाने और उसकी डफली की आवाज़ सुनाई पड़ती है।)

नकलची : नकल करने की जो बात है।
मेरा कोई सानी नहीं
मैं नाचूँ ... नाचता ही रहूँ
मैं हूँ बड़ा नन्हा नकलची
दूसरों की नकल करना
यहाँ, वहाँ, हर जगह
घूमना दिन भर
अपनी डफली को बजाना
हा हा हू ... हा हा हू

मूँगफली वाला : अच्छा अब वैसा ही करेंगे जैसा हमने सोचा था। मैं ठीक वक़्त तक रुकूँगा। और आसमान की तरफ इशारा करूँगा और कहूँगा, "आहा"। तुम लोग, भी वैसा ही करोगे। अब चुप हो जाओ।

(मूँगफली वाला लड़का 1 के साथ मंच के किनारे दुबक जाता है। लड़का 2 और लड़की एक दूसरे की तरफ़ देखकर ओठों पर उँगली रखते हैं और फिर नन्हें नकलची की ओर मुड़ते हैं, जो बाईं ओर से आ रहा है।)

नकलची : *(अपने से)* इस बार चार हैं। चार की नकल करना थोड़ा मुश्किल ज़रूर है लेकिन ये चारों गधे हैं। मैं अभी सबका मज़ाक उड़ाऊँगा।

(नकलची लड़का 2 और लड़की के पास आता है। तीनों एक-दूसरे की तरफ बिना कुछ बोले देखते रहते हैं। लड़का 2 और लड़की नम्रता से झुकते हैं। नकलची भी वैसे ही करता है। लड़का 2 और लड़की उसकी तरफ़ देखकर व्यंग्य से मुस्कुराते हैं। नकलची भी उसी तरह मुस्कुराता है।)

लड़का 2 : हुँ हुँ ...

नकलची : हुँ हुँ ...

लड़की : ओन, ऊन, आन ...

नकलची : ओन, ऊन, आन ...

(लड़का 2 और लड़की फिर नम्रता से झुकते हैं और नकलची भी वैसे ही करता है। अन्तराल)

मूँगफली वाला : *(अचानक ऊपर इशारा करके)* आहा ...

लड़की : *(ऊपर इशारा करके)* आहा ...

नकलची : *(अनजाने नकल भूलकर ऊपर देखने लगता है)* ऊपर कुछ है?

लड़की, लड़का-2	: *(तुरन्त)* ऊपर कुछ है?
नकलची	: ओह, तुमने मुझे धोखा दिया।
लड़का 2, लड़की	: ओह, तुमने मुझे धोखा दिया।
	(लड़का 1 और मूँगफली वाला भी कूदकर आगे आते हैं।)
नकलची	: हाँ, तो तुम बन्दरों ने सोचा है कि सब मिलकर मेरी नकल उतारोगे।
सब	: हाँ, तो तुम बन्दरों ने सोचा है कि सब मिलकर मेरी नकल उतारोगे।
नकलची	: तुम सचमुच मसखरे हो।
सब	: तुम सचमुच मसखरे हो।
नकलची	: ***(अचानक अपने शरीर को कँपाते हुए नाचना शुरू करता है)*** हो रे .... डफली वाले मेरी डफली ...
सब	: ***(उसे घेरकर नाच की नकल करते हुए)*** हो रे ... डफली वाले मेरी डफली।
नकलची	: हा हा हा ... तुम कुछ भी करो। तुम मेरी डफली की आवाज़ की नकल नहीं कर सकते।
सब	: हा हा हा ... तुम कुछ भी करो। तुम मेरी डफली की आवाज़ की नकल नहीं कर सकते।

नकलची	: ज़रा सोचो।
सब	: ज़रा सोचो।
नकलची	: हा हा हा हा।
सब	: हा हा हा हा।
	(वे उसे पकड़ते हैं और डरावनी मुद्रा बनाते हैं, उसे इधर-उधर धकेलते हैं और नकल करते रहते हैं।)
नकलची	: ए ... छोकरो .... छोकरी।
सब	: ए ... छोकरो ... छोकरी।
नकलची	: तुम सब सिर्फ़ नकल कर रहे हो।
सब	: तुम सब सिर्फ़ नकल कर रहे हो।
नकलची	: तुम जानते हो मैं कौन हूँ?
सब	: तुम जानते हो मैं कौन हूँ?
नकलची	: मैं यहाँ का अकेला नकलची हूँ।
सब	: मैं यहाँ का अकेला नकलची हूँ।
नकलची	: बन्द करो यह सब।
सब	: बन्द करो यह सब।
नकलची	: मैं इसे सहन नहीं कर सकता।
सब	: मैं इसे सहन नहीं कर सकता।
नकलची	: मैं तुम्हें घूँसा मारूँगा।
सब	: मैं तुम्हें घूँसा मारूँगा।
नकलची	: *(मुट्ठी दिखाकर)* यह देखो।
सब	: *(मुट्ठियाँ दिखाकर)* यह देखो।
नकलची	: *(सामने चार मुट्ठियाँ देखकर उसकी हिम्मत टूट जाती है और वह रोने लगता है।)* ऊ .. ऊ... ऊ...
सब	: ऊ ... ऊ ... ऊ ...
	(नन्हा नकलची रोता हुआ बाईं ओर भागता है। चारों उसके रोने की नकल करके उसके पीछे भागते हैं।)
नकलची	: माँ। ये लड़के मुझे छेड़ रहे हैं।
सब	: माँ। ये लड़के मुझे छेड़ रहे हैं।
नकलची	: ऊ ... ऊ ... ऊ ...
सब	: ऊ ... ऊ ... ऊ ... अब कभी किसी की नकल मत करना।
नकलची	: ऊ ... ऊ ... ऊ ...
सब	: ऊ ... ऊ ... ऊ ... अब कभी किसी की नकल मत करना।

पर्दा

(जापान का एक नाटक। एशिया और प्रशान्त क्षेत्र के बाल नाटकों के संग्रह 'नाटकों के देश में' से। नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के सौजन्य से साभार)

ओक

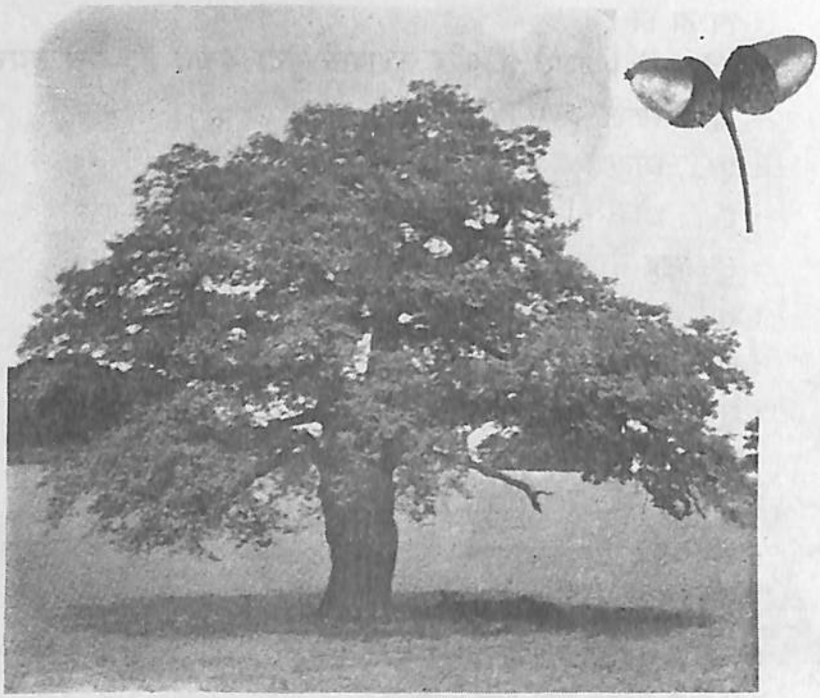

इस बार एक ऐसे पेड़ के बारे में जानकारी इकट्ठी की गई है जो हमारे देश के साथ-साथ दुनिया के कई हिस्सों में पाया जाता है। और सारी दुनिया में अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है। हालाँकि इसका लगभग सभी जगह एक प्रचलित नाम भी है 'ओक'। यह पेड़ हिमालय और उसके आसपास के क्षेत्र में ख़ूब मिलता है। हमारे देश में ओक के कई प्रजातियों के पेड़ पाए जाते हैं। इन 22-23 प्रजातियों में से ज़्यादातर हमेशा हरे रहने वाले होते हैं।

हिमालय के इलाके में और सतलज घाटी में मिलने वाली एक प्रजाति के ओक का चित्र यहाँ दे रहे हैं। यह हमेशा हरा रहने वाला पेड़ है। इसकी ऊँचाई 12 मीटर तक भी हो जाती है। इस पेड़ की छाल गहरे राख के जैसे रंग की होती है जो छोटी-छोटी छिपटियों में टूट जाती है।

इस पेड़ की अलग-अलग प्रजातियों में पत्तियाँ अलग-अलग आकार की दिखाई देती हैं। पत्तियाँ अण्डाकार या लगभग त्रिभुजाकार होती हैं। साधारण किनारे वाली तो कम ही दिखाई पड़ती हैं। नुकीले किनारे वाली या किनारे से कटी - फटी पत्तियाँ ही इन पेड़ों में अधिक देखने को मिलती है। पत्तियों के गुच्छों के साथ ही फूल खिलते हैं। ओक में एक ही पेड़ पर मादा और नर फूल अलग-अलग लगते हैं। फल आकार में काफ़ी बड़ा और अण्डाकार होता है। डंठल की तरफ से यह एक प्याली जैसी आकृति में समाया रहता है। यह प्याली जैसी आकृति शल्कों से बनी होती है। फल हल्के भूरे रंग का होता है। अक्टूबर तक इसके फल पक जाते हैं।

इस पेड़ की लकड़ी लाल-सी भूरे रंग की कठोर होती है। यह लकड़ी बहुत लम्बे समय तक काम में आती है। लकड़ी बहुत मज़बूत और टिकाऊ किस्म की होती है। फर्नीचर पुल, जहाज़ और इमारतें बनाने में काम आती है। इस पर पॉलिश करके इससे खेती के औज़ार, औज़ारों के हत्थे आदि बनाए जाते हैं। ओक की एक प्रजाति के पेड़ों के तने की बाहरी छाल से कार्क बनता है। इस पेड़ की पत्तियों से भरी डालों को बाड़ बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। इसके फल बहुत कम ही इन्सान द्वारा खाए जाते हैं लेकिन पहाड़ी इलाकों में जानवरों, ख़ासकर सुअरों को खिलाने के काम आता है। ओक के फलों से तेल भी निकाला जाता है। यह तेल यूरोप के कई देशों में खाने के साथ इस्तेमाल किया जाता है।

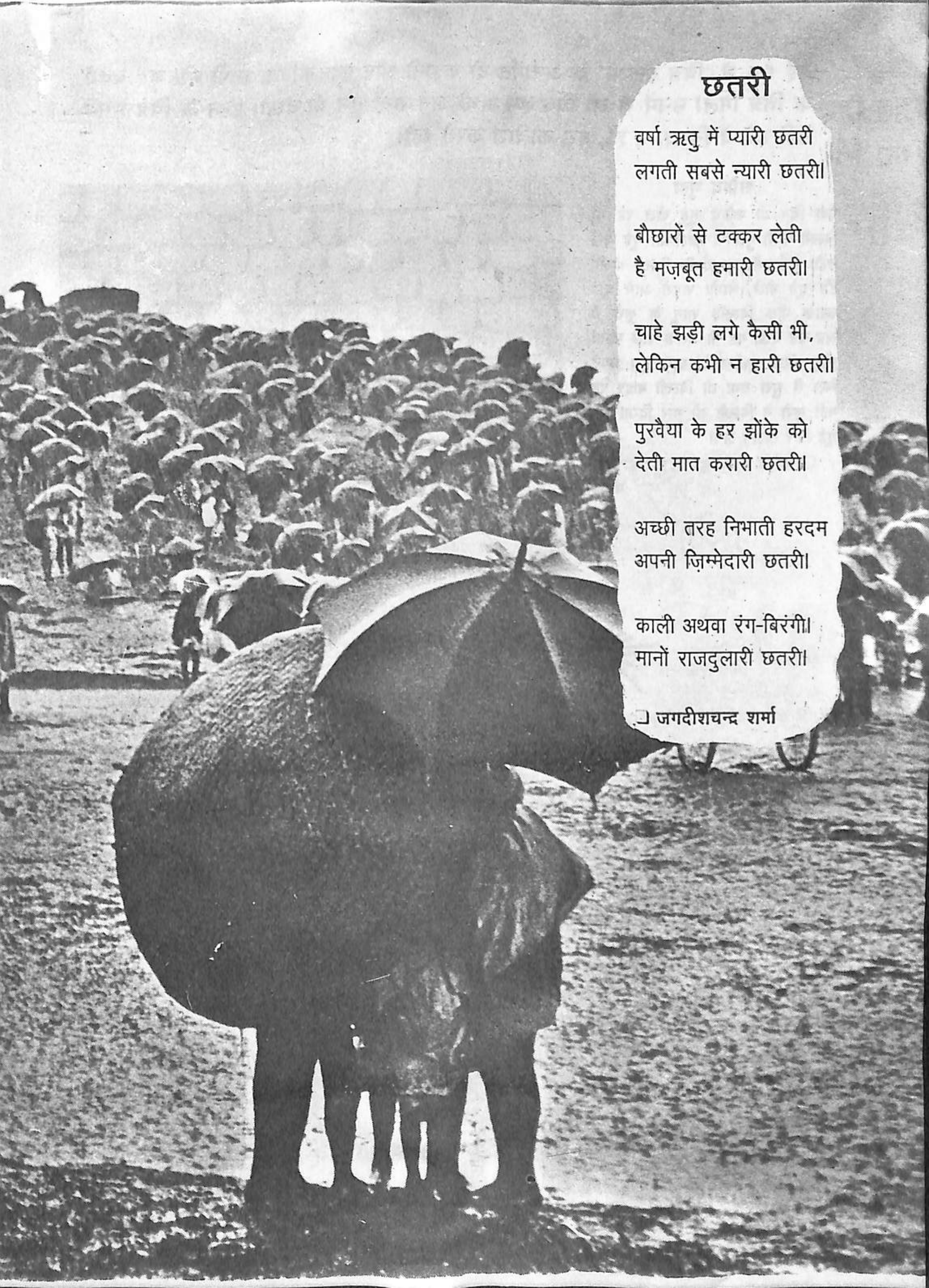

छतरी

वर्षा ऋतु में प्यारी छतरी
लगती सबसे न्यारी छतरी।

बौछारों से टक्कर लेती
है मज़बूत हमारी छतरी।

चाहे झड़ी लगे कैसी भी,
लेकिन कभी न हारी छतरी।

पुरवैया के हर झोंके को
देती मात करारी छतरी।

अच्छी तरह निभाती हरदम
अपनी ज़िम्मेदारी छतरी।

काली अथवा रंग-बिरंगी।
मानों राजदुलारी छतरी।

❑ जगदीशचन्द्र शर्मा

मई 96 में 'चित्र बनाओ' के अन्तर्गत दो कहानी और एक कविता छापी थी। कई बच्चों के चित्र मिले। उनमें से जो चित्र हमें अच्छे लगे उन्हें तुम भी देखो। जिन के चित्र इसमें नहीं छपे वे निराश न हों, बस कोशिश करते रहो।

सफ़ेद चूहा

एक दिन दो सफ़ेद चूहे खेल रहे थे। बिल्ली बोली मुझे भी खिलाओ। चूहे बोले नहीं। तुम हमें मार दोगी। बिल्ली बोली, हाँ। चूहे बोले, भागो। सबसे आगे चूहा उसके पीछे बिल्ली। सोनू के कुत्ते ने जब यह देखा वह भी उसके पीछे भागा। सोनू बोला रुको-रुको। जब चूहा अपने बिल में घुस गया तो बिल्ली बाहर रह गई। कुत्ते ने बिल्ली को मार दिया। अब चूहे फिर खेलने लगे।

❑ रोहित बस्सी, दूसरी, भटिन्डा कैंट, पंजाब

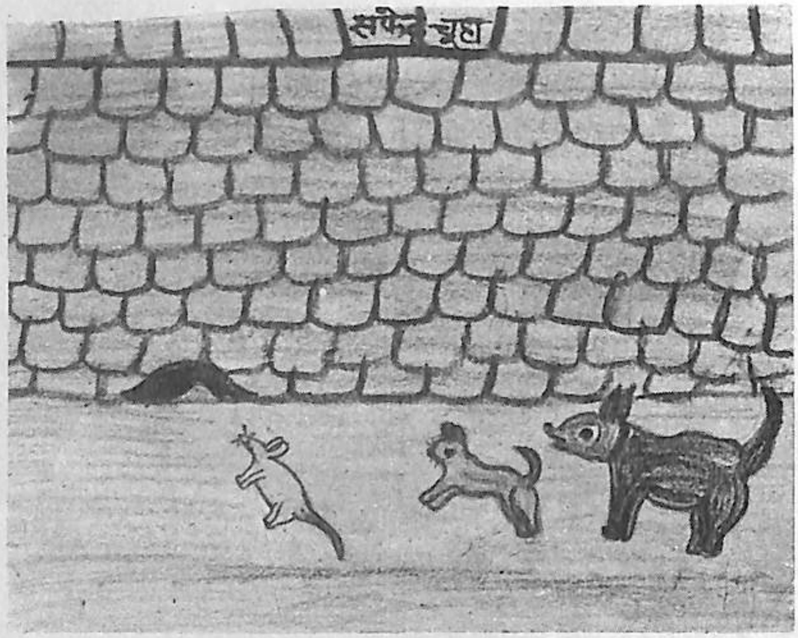

आरती सेन, दसवीं, बघराजी, जबलपुर, म.प्र.

संजना शर्मा, पाँचवीं, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

अतुलसिंह चौहान, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

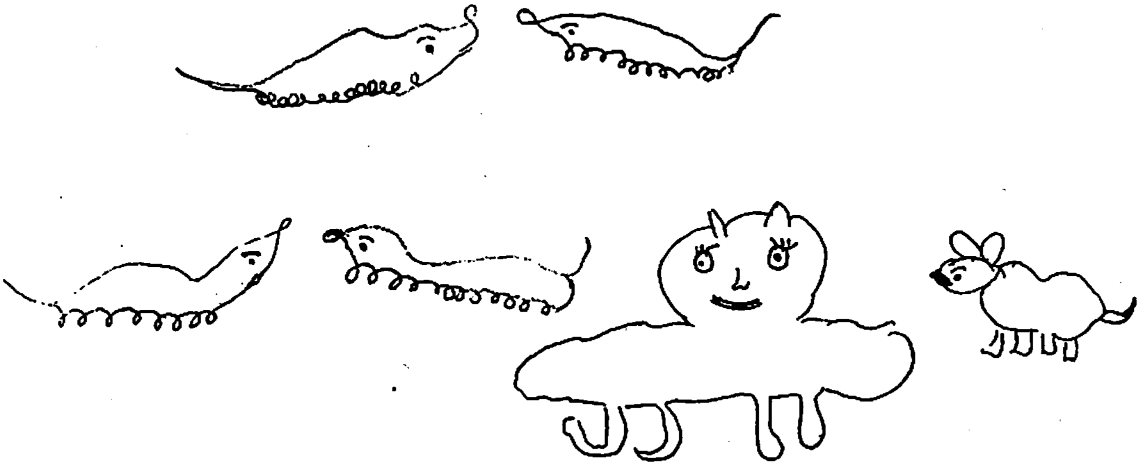

मनु पाण्डे, ग्यारह वर्ष, जाखन देवी, अल्मोड़ा, उ.प्र.

राजेश उमावा, ग्यारह वर्ष, रामपुरा, मन्दसौर, म.प्र.

आकाश

नीला है, गोल है
वह कितना अनमोल है

तारों ने सजाया जिसको
सूरज ने चमकाया इसको

सभी तकते इसकी सुन्दरता
यह कितना सुन्दर छाता है

कभी बादल करते सफ़ेद
तो कभी नीला रहता है।

रात में ये दिखता काला
सुबह पीला रहता है।

❏ कैलाश हरियाले
हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

मई 96 में छपी कविता और कहानियों के लिए बनाए गए चित्र भेजे जिन बच्चों ने उनके नाम हैं-

राजेश तिवारी, भोपाल। बलदेव जुमनानी, होशंगाबाद। सीताराम सिदार, गोखार, रायगढ़। चम्पालाल कुशवाहा, प्रदीप कुमार बैरागी, ममता कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद। मनीष गौतम, कुंडम, जबलपुर। राहुल उपाध्याय, बड़िबोड़ी, नसरूल्लागंज, सीहोर। रमेश कुमार राने, बारव्ही, बैतूल। प्रदीप शर्मा, खातेगाँव, देवास। पूजा जोशी, सीहोर। अनिल कुमार राय, खिमलासा, सागर। चरण दास पाण्डेय, खड्डा, रीवा। माखनलाल ध्रुव, सुकमा, बस्तर। शैलेन्द्र मालवीय, भरलाय, होशंगाबाद, सभी म.प्र.। पुनीत महाजन, फरीदाबाद, हरियाणा। रोहिन बस्सी, भटिन्डा कैंट, पंजाब।

पायल महाजन, सातवीं, फरीदाबाद, हरियाणा

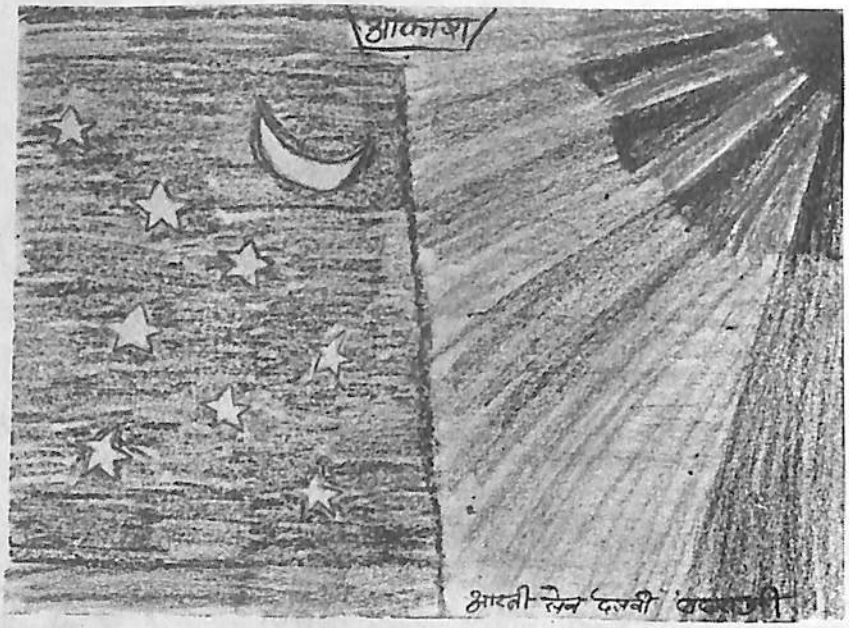

आरती सेन

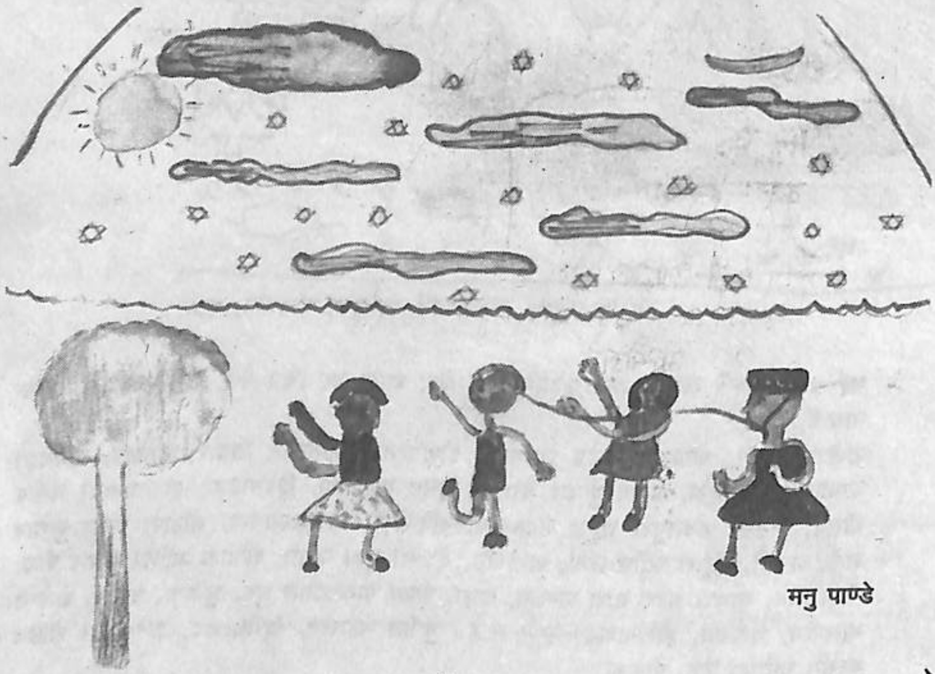

मनु पाण्डे

राजेश उमावा

अपूर्वा बामेज़ाई, नौ वर्ष, भोपाल, म.प्र.

घड़ी की रोशनी

आरती सेन

एक बार की बात है मैं, मेरा भाई, मेरी माँ और मेरे पापा एक कमरे में बैठे हुए थे। पापा ने हाथ में घड़ी पहनी हुई थी। सूरज की रोशनी घड़ी पर पड़ रही थी। घड़ी का अक्स दीवार पर पड़ रहा था। मेरा भाई उसे देखकर खुश तो हो रहा था लेकिन उसे समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या है। तब पापा ने मेरे भाई से कहा कि उस रोशनी को पकड़ो। जब मेरा भाई उसे पकड़ने गया तो पापा ने हाथ हिला दिया। हाथ हिलाने से घड़ी की रोशनी दूसरी ओर चली गई। फिर मेरा भाई दोबारा रोशनी को पकड़ने गया लेकिन नहीं पकड़ पाया। आखिर में जब मेरा भाई उसे पकड़ने में असफल रहा तो उसने हाथ जोड़ कर कहा ऊँ।

❑ उज़्मा मुल्ला, चौथी, नई दिल्ली

नेहा शर्मा, छठवीं, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

माथापच्ची

(1)

दो पड़ौसी श्याम और केवट नींबू बेचने निकले। श्याम के पास पचास नींबू थे जबकि केवट के पास सिर्फ़ 40 नींबू थे। दोनों ने साथ मिलकर नींबू के दाम तय किए और उसी दाम पर दोनों ने अपने-अपने नींबू बेचे। शाम को जब वे घर लौटे तो श्याम ने भी 15 रु. कमाए थे और केवट ने भी 15 ही रुपए कमाए थे।

यह कैसे हुआ? किस दाम से बेचे थे उन्होंने नींबू?

(2)

जल्दी से सोचकर दो ऐसी संख्याएँ बताओ, जिन्हें गुणा करने पर जवाब 11 आए।

(3)

इस वक्त हमारी घड़ी मे 9 बजकर 25 मिनट हुए हैं। हमने घड़ी को उल्टा कर दिया है यानी 12 नीचे और 6 ऊपर। फिर उसे एक आइने के सामने पकड़ा है। क्या तुम बता सकते हो कि हमारी उल्टी घड़ी की आइने में बनने वाली परछाईं नीचे बने चित्रों में से कौन-सी है?

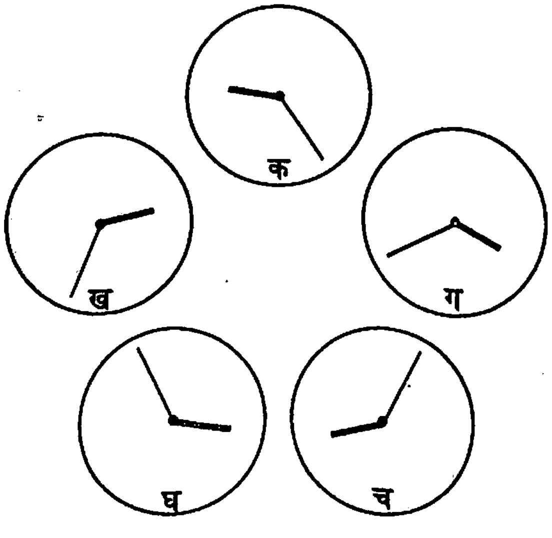

(4)

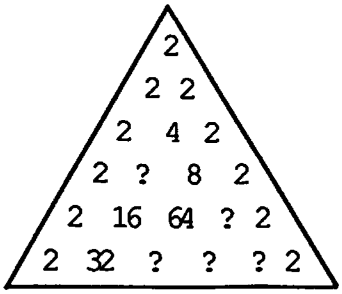

इस त्रिभुज में एक ख़ास तार्किक क्रम के आधार पर संख्याएँ जमी हैं। क्या तुम इस क्रम को पहचान कर सवालिया निशान (?) की जगह पर आने वाली सख्याओं को ढूँढ निकालोगे?

(5)

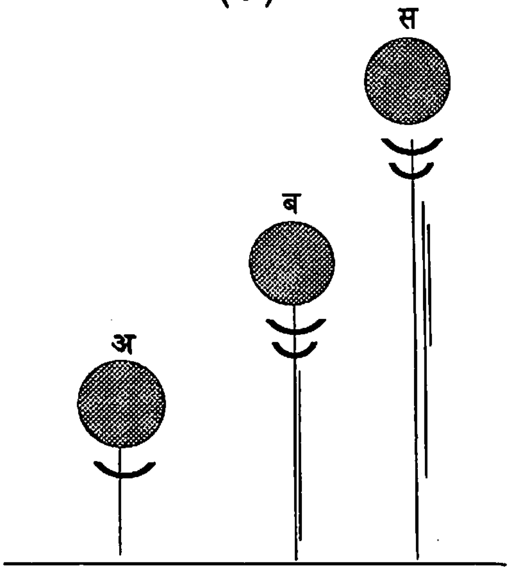

यहाँ तीन एक ही रंग-रूप और एक ही आकार की गेंद उछाली गई हैं। हम केवल इतना बताए दे रहे हैं कि इनमें से एक रबर की बनी है, एक लकड़ी की और एक लोहे की। क्या तुम सिर्फ़ इनकी उछाल देखकर यह बता सकते हो कि कौन-सी गेंद कि चीज़ से बनी है?

(6)

  1 1 1
\+ 3 3 3
\+ 7 7 7
\+ 9 9 9
―――――
1 1 1 1

बारिश से तंग आकर मोहल्ले के सारे बच्चे दीनू के घर के बरामदे में इकट्ठे हो गए। फिर दौर चला पहेलियाँ बूझने, माथा पच्ची करने और चुटकुले सुनाने का। आख़िरी पहेली दीनू ने पूछी। उसने अपनी कापी पर जोड़ का यह सवाल लिखा और कहा कि जो जवाब लिखा है वह किन्हीं पाँच अंकों को हटाने पर आता है। कौन से हैं वो पाँच अंक। सारे बच्चे ढूँढ रहे हैं। तुम भी ढूँढो।

(7)

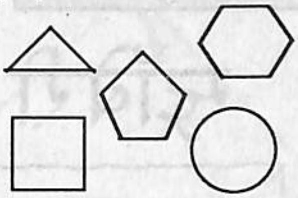

इन पाँचों आकृतियों में से एक बाक़ी चारों से मेल नहीं खाती। ढूँढ निकालो उसे।

वर्ग पहेली : 63

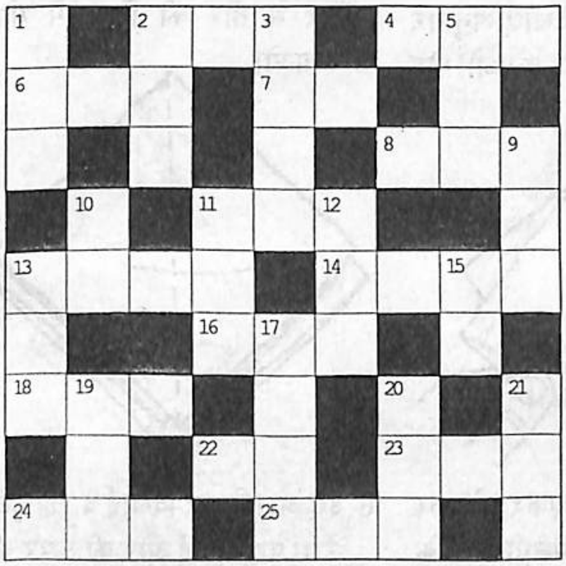

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. बखर की उलटफेर में एक मात्रा की कमी है, वर्ना बुरा होता (3)
4. रवि डगमगाता है, रास्ते पर (3)
6. इसे हटाओगे तो शब्द का असली चेहरा दिखेगा (3)
7. कार थमने से एक प्राचीन सवारी की याद आ गई (2)
8. अबे बस कर, यूँ लाचार न कर (3)
11. देश (3)
13. शारारिक खेल और व्यायाम (4)
14. सफाई कहो या असली कारण (4)
16. पासे की बिन्दियों की गिनती से की जाने वाली भविष्यवाणी (3)
18. लखनऊ में एक नाम छुपा है (3)
22. निराली आवाज़ वाला एक चौपाया (2)
23. गुनाह करना ठीक नहीं, बिलावजह (3)
24. रामायण की नायिका (3)
25. दूध से बनने वाली एक लाजवाब मिठाई (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. डूबते को इसी का सहारा काफ़ी होता है (3)
2. बत्तख़ बरगद के क्या समाचार हैं? (3)
3. सब तर हो गए, इस मौसम में (4)
5. गगरी बड़ी में निर्धन (3)
9. प्रमाण (3)
10. अंधेरे में सब ...... (2)
11. शतरंज के खेल में बादशाह के बाद की गोटी (3)
12. कहते हैं कि किसी की यह हाथ में हो तो उससे कुछ भी करवाया जा सकता है (3)
13. लालटेन (3)
15. ख्याति (2)
17. समझ की धार बढ़ाने में फँस न जाना (4)
19. नख नख में खोदना (3)
20. समझने वाला समझ गया जो न समझे वो........ है (3)
21. नेकी कर तो पेड़ मिलेगा (3)

● बसन्त तिवारी, भोपाल, म. प्र. द्वारा बनाई गई वर्ग पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-63 का हल दिसम्बर, 1996 के अंक में देखें।

खेल कागज़ का

स्ट्रॉबेरी

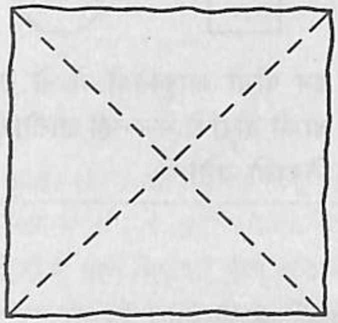

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना कर खोल लो। कागज़ को पलट लो।

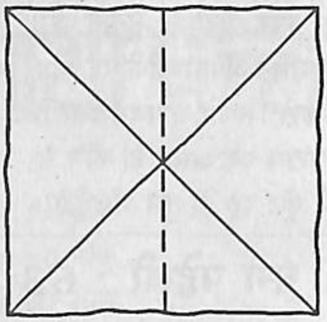

2. अब इस चित्र में दिखाए अनुसार टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके खोल लो।

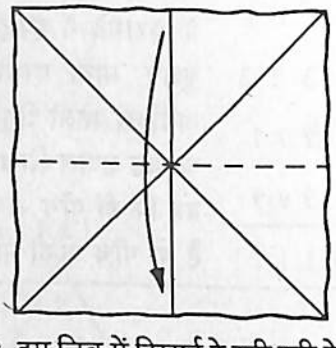

3. इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

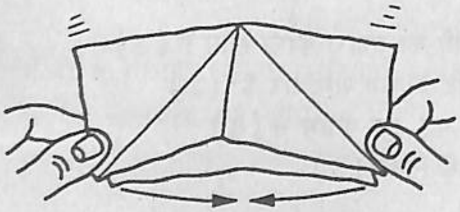

4. मुड़ी हुई आकृति को चित्र में दिखाए अनुसार पकड़कर दोनों सिरों को पास लाओ।

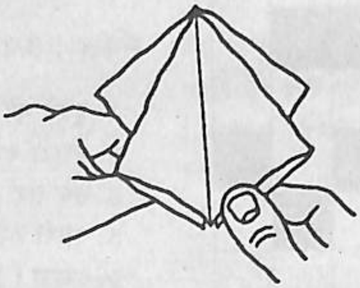

5. इसके सारे मोड़ दबाकर पक्के कर लो। ऐसी आकृति मिलेगी आगे के चित्र थोड़े बड़े करके दिखाए जा रहे हैं।

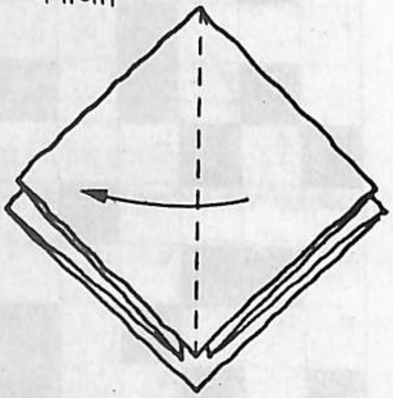

6. इस आकृति पर दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से दाईं ओर की ऊपर की एक दोहरी परत तीर की दिशा मे मोड़ते हुए खड़ी कर लो।

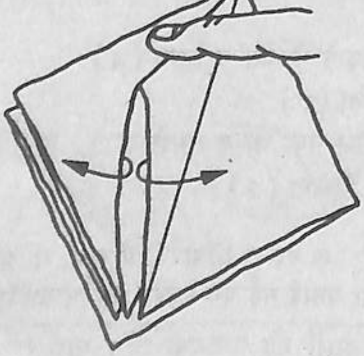

7. इस तरह। अब इस दोहरी परत को दबाओ इस तरह कि इस हिस्से की दोनों परतें खुल जाएँ।

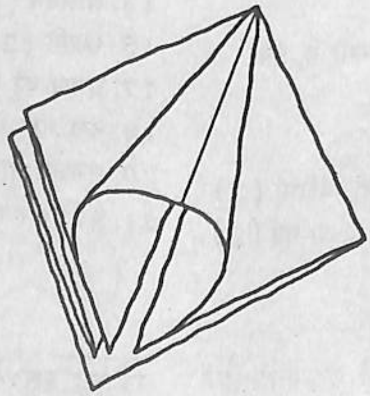

8. इस तरह।

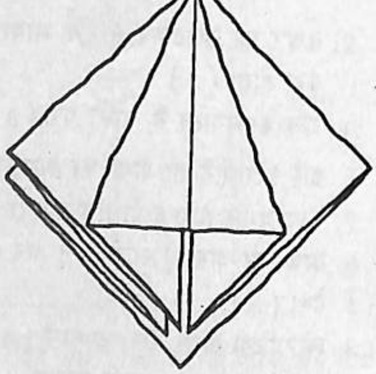

9. अब इसे ठीक तरह से दबा लो। चित्र में दिखाए अनुसार दाएँ-बाएँ दोनों तरफ़ बराबर-बराबर होना चाहिए। अब इस आकृति को पलट लो।

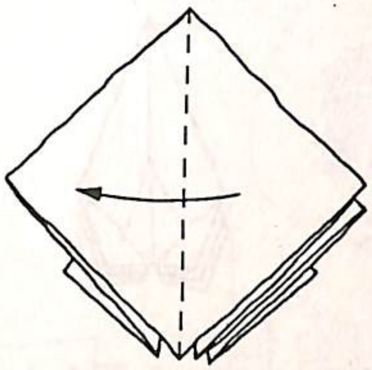

10. अब इस तरफ की दाईं ओर की ऊपरी परत के साथ भी उसी तरह चित्र 7 से 10 तक की क्रियाएँ दोहरा लो।

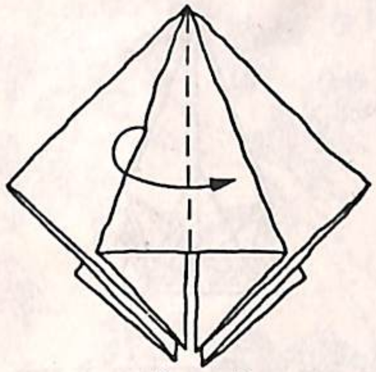

11. इस तरह की आकृति बन जाएगी अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से बाईं ओर की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो।

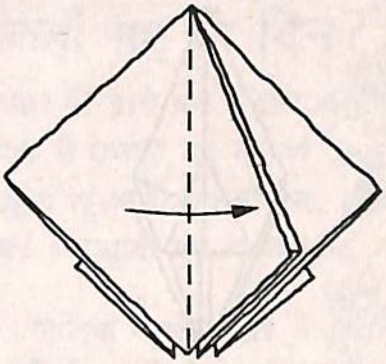

12. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से बाईं ओर की ऊपरी परत को उठाकर उसके साथ भी चित्र 7 से 10 तक की क्रियाएँ दोहरा लो।

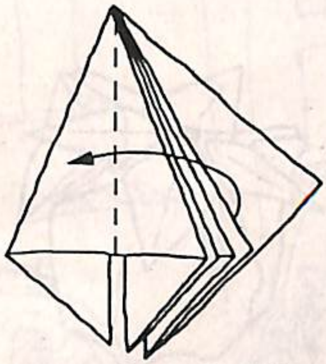

13. इस तरह की आकृति बनेगी अब इसमें दिखाई दे रही दाईं ओर की ऊपरी छोटी परतों को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

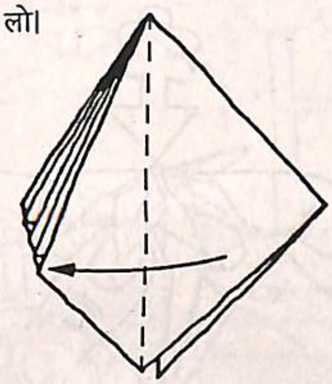

14. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रहे दाईं ओर के हिस्से के साथ भी चित्र 7 से 10 तक की क्रियाएँ दोहरा लो।

15. इस तरह। अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से बाईं ओर की ऊपरी परत को तीर की दिशा में मोड़ लो।

16. इस तरह की सपाट सतह वाली आकृति मिल गई। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से ऊपरी परतों को तीर की दिशा में मोड़ लो।

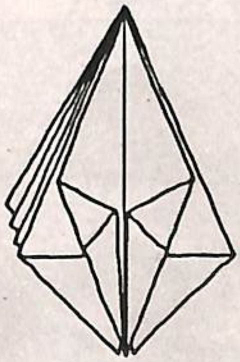

17. इस तरह। अब इसी तरह सभी सपाट सतह वाली परतों के निचले सिरों को मोड़ लो।

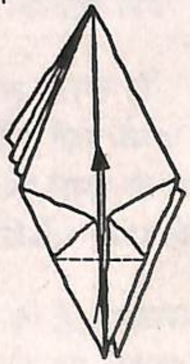

18. ऐसी आकृति बन गई न? अब चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी परत को तीर की दिशा में मोड़ो।

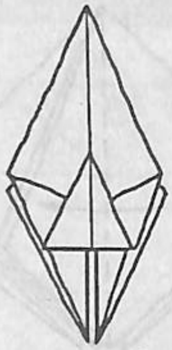

19. इस तरह। अब इसी तरह के मोड़ चारों परतों पर बना लो।

20. ऐसी आकृति बन जाए तो आगे बढ़ो। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से आकृति के दोनों सिरों को अन्दर की तरफ मोड़ दो।

21. इस तरह। अब इसी तरह के मोड़ नीचे की हर परत पर बना लो।

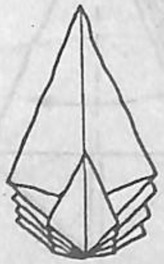

22. ऐसी आकृति बन जाएगी।

23. अब आकृति को चित्र में दिखाए तरीक़ेसे पकड़ो और जहाँ तीर का निशान दिखाया गया है वहाँ से मुँह से हवा भर दो।

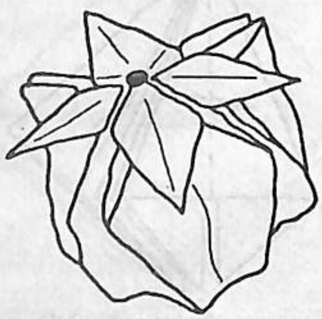

24. बन गई स्ट्रॉबेरी। यह एक तरह का फल होता है लेकिन तुम्हारे खेलने के लिए यह गेंद का ही काम देगी।

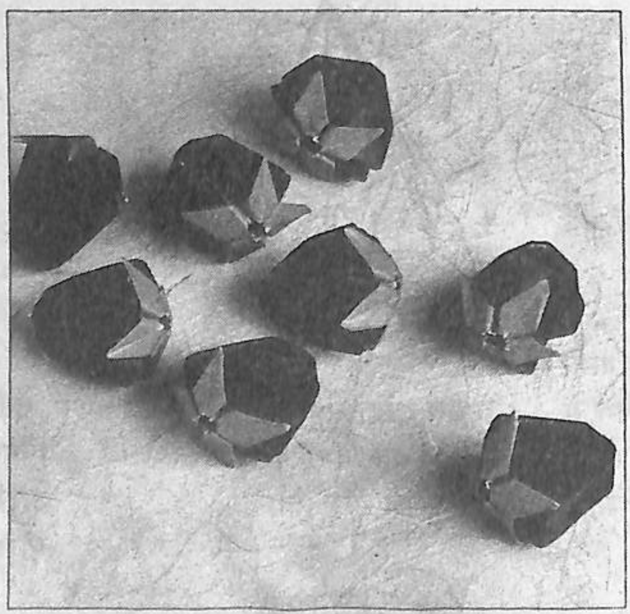

कहाँ गए वो दिन?

शहर के बच्चे बड़े उदास
कब से उनको यह तलाश
खुला खुला हो एक मैदान
घर से ज़्यादा दूर न पास

न मालिक न चौकीदार
जहाँ न भरता हो बाज़ार
ट्रकों, बसों की न घुसपैठ
न दूषण का कारोबार

जो मन भाए खेल सकें
गेंद उछालें, झेल सकें
कूद फाँद कसरत कुश्ती
दंड भी चाहें, पेल सकें

गुल्ली डंडा, छिया छलारे
भाग सकें वे चारों ओर
ना बंदिश ना स्पर्धा
खुशी-खुशी अज़माएँ ज़ोर

अगर निकट हों पेड़ खड़े
फिर तो लूटें खूब मज़े
चढ़ सकें जो ऊँची डाल पर
तो मन में विश्वास जगे

नदिया ताल तलैया हो
पानी में झिंग झिंग थैय्या हो
और वहाँ जो नैय्या हो
फिर सब खेलें - हैय्या हो

पर बच्चों को है अहसास
हावी सब पर अंधविकास
पानी पेड़ खुले मैदान
लगती है सपनों की बात

❑ उमाकान्त द्विवेदी

क़िस्सा - बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा : जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो।

बुरातीनो बहुत शरारती था। फिर बुरातीनो ने पापा कार्लो से कहा कि वह भी स्कूल जाएगा। कार्लो ने खुशी-खुशी बुरातीनो को स्कूल भेजने की तैयारी की।

बुरातीनो घर से स्कूल के लिए निकला। रास्ते में कठपुतली थियेटर देखकर उसने अपनी किताब बेच दी और टिकट लेकर थियेटर में घुस गया। थियेटर की कठपुतलियों ने उसे पहचान लिया और हल्ला मचाने लगीं। यह देखकर थियेटर का मालिक बुरातीनो को पकड़कर अन्दर ले गया। अब आगे पढ़ो ...

काराबास बाराबास ने बुरातीनो को सिक्के देकर घर भेजा

दोनों कठपुतले जब बुरातीनो को लेकर रसोईघर में आए तो काराबास बाराबास भयंकर आवाज़ के साथ नाक सुड़सुड़ाता हुआ छड़ से अलाव में कोयला उलट-पलट रहा था।

अचानक उसकी आँखें लाल हो आईं, नाक और फिर पूरा चेहरा लम्बी-लम्बी झुर्रियों से सिकुड़ गया। शायद कोई चिनगारी उड़कर नथुनों में घुस गई थी।

"आक .... आक ... आक ...", आँखें तरेरते हुए काराबास बाराबास गुर्रा पड़ा, "आक-छीं!" और उसने ऐसी छींक मारी कि अलाव से राख का एक गुबार-सा उठ गया।

जब कठपुतली विज्ञान का डाक्टर छींकना शुरू करता था, तो फिर रुक नहीं पाता था, कभी-कभी उसे पचास क्या लगातार सौ-सौ छींकें आ जाती थीं। इन असाधारण छींकों से उसे कमज़ोरी आ जाती थी और वह कुछ दयालु हो उठता था।

पियेरो नज़र बचाकर बुरातीनो के कान में फुसफुसाया, "छींकों के बीच उससे कुछ बात करने

की कोशिश करो।"

"आक-छीं! आक-छीं!" काराबास बाराबास मुँह फाड़कर साँस खींच रहा था और सिर झटक-झटककर पैर पटकते हुए छींकता जा रहा था। रसोईघर में सब कुछ हिल रहा था, खिड़की के शीशे झनझना रहे थे, खूँटियों पर टँगे करछुल-छलनी खड़खड़ा रहे थे।

इन छींकों के बीच बुरातीनो ने अपनी महीन आवाज़ में रोना-धोना शुरू किया, "कितना अभागा हूँ मैं, मुझ ग़रीब पर किसी को भी दया नहीं आती!"

"बन्द कर रोना!" काराबास बाराबास चिल्लाया। "तुम खलल पहुँचा रहे हो... आक-छीं!"

"स्वस्थ रहिए, श्रीमान," बुरातीनो हिचकियाँ लेता हुआ बोला।

"शुक्रिया ... तुम्हारे माँ-बाप ज़िन्दा हैं? आक-छीं!"

"मेरी माँ तो, श्रीमान कभी नहीं थी। आह, मैं कितना अभागा हूँ!" और बुरतीनो इतनी तीखी आवाज़ में रो पड़ा कि काराबास बाराबास के कान में वह सुई की तरह चुभने लगी। वह पैर पटकने लगा।

"बन्द कर यह रिरियाना, कहा न मैंने! आक-छीं! और तेरा बाप ज़िन्दा है?"

"मेरे अभागे पिता अभी ज़िन्दा हैं।"

"कैसा लगेगा तेरे बाप को, जब उसे पता

चलेगा कि तुझे जलाकर मैं खरगोश और दो चूज़े भूनकर खा गया ... आक-छीं!"

"बेचारे पिताजी तो वैसे ही भूख और ठण्ड से किसी भी दिन चल बसेंगे। मैं ही उनके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा हूँ। दया कीजिए, मुझे जाने दीजिए।"

"हज़ार-हज़ार लानत!" काराबास बाराबास गरज उठा। "दया करने का प्रश्न ही नहीं उठता। खरगोश और चूज़े भूनने हैं। चलो, अलाव में घुसो!"

"यह मैं नहीं कर सकता।"

"क्यों?" काराबास बाराबास ने पूछा सिर्फ़ इसलिए कि बुरातीनो बोलता रहे, चिल्ला-चिल्लाकर कान न फाड़ने लगे।

"एक बार मैंने अलाव में नाक घुसेड़ने की कोशिश की थी, लेकिन उसमें सिर्फ़ छेद ही हुआ, और कुछ नहीं।"

"क्या बकवास है!" काराबास बाराबास को आश्चर्य हुआ। "अलाव में तुम नाक से कैसे छेद कर सकते हो?"

"क्योंकि, अलाव और उस पर रखा पतीला एक कैनवस के टुकड़े पर बने हुए थे।"

"आक-छीं!" काराबास बाराबास ने इतने ज़ोर से छींका कि पियेरो बाएँ उड़ा, आर्लेकिन दाएँ और बुरातीनो बीचोंबीच लट्टू की तरह नाचने लगा।

"कैनवस के टुकड़े पर अलाव और पतीले का

चित्र तुमने कहाँ देखा है?"

"अपने पापा कार्लो की कोठरी में।"

"तुम्हारे पिता का नाम कार्लो है!" काराबास बाराबास कुर्सी से उछल पड़ा, उसके हाथ फैल गए, दाढ़ी लहरा गई "अच्छा, तो बूढ़े कार्लो की कोठरी में गुप्त ..."

कहते-कहते काराबास बाराबास ने अपने मुँह में समूची मुट्ठी घुसेड़ ली, कि कहीं यह रहस्य सब के सामने न खुल जाए। कुछ देर तक वह इसी मुद्रा में बैठा रहा, उसकी उभरी आँखें अलाव की बुझती आग पर टिकी रहीं।

"अच्छा," अन्त में उसने कहा, "आज मैं अधपके खरगोश और अधभुने चूज़ों से ही काम चला लेता हूँ। मैं तुम्हें जीवनदान देता हूँ, बुरातीनो। और इतना ही नहीं ...."

उसने दाढ़ी के नीचे जैकेट की जेब में हाथ डाला, सोने के पाँच सिक्के निकाले और बुरातीनो की तरफ़ बढ़ाए, "और इतना ही नहीं .... ये सोने के सिक्के ले जाओ और कार्लो को दे दो। उसे मेरा सलाम कहना और यह भी कि वह भूख और ठण्ड से किसी भी हालत में न मरे और सबसे बड़ी बात है कि अपनी उस कोठरी से कहीं न जाए, जहाँ कैनवस के पुराने टुकड़े पर अलावघर बना हुआ है। जाओ, आराम से सो जाओ, फिर सुबह-सुबह घर भाग लेना।"

बुरातीनो ने सोने के पाँच सिक्के जेब में रख लिए और अत्यन्त नम्रता से झुककर अभिवादन किया, "बहुत, बहुत धन्यवाद, श्रीमान। पैसे सौंपने के लिए मुझसे अधिक विश्वस्त पात्र आपको नहीं मिलेगा ...."

आर्लेकिन और पियेरो बुरातीनो को कठपुतलियों के शयन-कक्ष में ले गए। वहाँ सभी कठपुतलियाँ एक बार फिर बुरातीनो को ख़ुशी से चूमने और गले लगाने, चिकोटियाँ काटने लगीं, जो पता नहीं कैसे अलाव में जला दिए जाने से बच निकला था।

वह कठपुतलियों से फुसफुसाकर कह रहा था, "इसमें ज़रूर कोई रहस्य छिपा हुआ है।"

बुरातीनो की बिल्ले बज़ीलिओ और लोमड़ी अलीसा से मुलाक़ात

सुबह तड़के बुरातीनो ने सोने के सिक्के दुबारा गिने। सिक्के उतने ही थे, जितनी कि उसके हाथ की उँगलियाँ - यानी पाँच। सोने के सिक्के मुट्ठी में दबाकर वह तुरन्त घर की ओर दौड़ चला। वह उछलता-कूदता गुनगुना रहा था, "पापा कार्लो के लिए नई जैकेट, शहद के ढेर सारे बिस्कुट और मुर्गेवाला लेमनचूस ख़रीदूँगा!"

कठपुतलियों का थियेटर और फहराती झण्डियाँ जब आँखों से ओझल हो गईं तो उसने तीन टाँगों वाली लंगड़ी लोमड़ी अलीसा और अन्धे बिल्ले बज़ीलिओ को देखा जो उदास, बौखलाए हुए धूल-धूसरित रास्ते में टहल रहे थे।

यह वह बिल्ला नहीं था जिसे बुरातीनो ने कल रास्ते में जाते समय देखा था, बल्कि यह दूसरा था - संयोगवश इसका भी नाम बज़ीलिओ ही था और यह भी धारियों वाला था।

बुरातीनो उनके पास से गुज़र जाना चाहता था कि लोमड़ी अलीसा ने फुसलाते हुए मीठी-मीठी आवाज़ में कहा, "नमस्ते, नेकदिल बुरातीनो! कहाँ भागते चले जा रहे हो?"

"अपने घर जा रहा हूँ, पापा कार्लो के पास।"

लोमड़ी ने मीठे लहज़े में एक आह ली, "पता

नहीं बेचारा कार्लो तुम्हें ज़िन्दा भी मिले, सर्दी और भूख से तो उसका बहुत बुरा हाल है ...."

"यह देखा है तुमने?" बुरातीनो ने मुट्ठी खोलकर सोने के पाँच सिक्के दिखला दिए। सिक्कों पर नज़र पड़ते ही लोमड़ी ने अनायास ही उनकी तरफ़ अपना पंजा बढ़ाया और बिल्ले ने अपनी अन्धी आँखें फाड़कर देखा, वे ऐसे चमचमा उठीं जैसे दो हरी-हरी मशालें।

लेकिन बुरातीनो ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया। "नेकदिल, प्यारे-प्यारे बुरातीनो, इतने सारे पैसों का तुम क्या करोगे?"

"पापा कार्लो के लिए जैकेट ख़रीदूँगा ... अपने लिए नया ककहरा ..."

"ककहरा, हाय!" लोमड़ी अलीसा ने सिर हिलाते हुए कहा, "पढ़ने-लिखने से तुम्हारा कोई भला न होगा ... पढ़ते-पढ़ते ही देखो अब तीन टाँगों पर चलने की नौबत आ गई।"

"ककहरा!" बिल्ला बज़ीलिओ बड़बड़ाया और गुस्से से फुफकारते हुए बोला, "इस बेकार की पढ़ाई-लिखाई से तो मैं अन्धा हो गया।"

नज़दीक ही पेड़ की सूखी डाल पर एक बूढ़ा कौवा बैठा हुआ था। यह सब सुनकर वह काँव-काँव करने लगा, "झूठ बोल रहे हैं, झूठ!"

बिल्ला बज़ीलिओ एकदम ऊपर की ओर उछला, पंजा मारकर कौवे को डाल से गिरा दिया और उसकी आधी दुम नोच डाली। मुश्किल से वह उड़कर निकल पाया। और बिल्ला फिर से अन्धा बनकर बैठ गया।

"तुम किसलिए उस पर झपटे, बज़ीलिओ?" बुरातीनो ने आश्चर्य से पूछा।

"आँख से तो अन्धा हूँ," बज़ीलिओ ने उत्तर दिया, "ऐसा लगा कि पेड़ पर कोई पिल्ला है ..."

फिर वे तीनों धूल भरे रास्ते पर आगे बढ़ चले। लोमड़ी ने कहा, "अक़्लमन्द, होशियार बुरातीनो, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे सोने के सिक्के दस गुने हो जाएँ?"

"बेशक, मैं चाहता हूँ! लेकिन यह कैसे हो सकता है?"

"बहुत आसान है। चलो, साथ-साथ चलते हैं।"

"कहाँ?"

"मूरखनगरी।"

बुरातीनो ने थोड़ी देर सोचा।

"नहीं, मुझे अभी घर जाना है।"

"ठीक है तो फिर चले जाओ। हम तुम्हें मजबूर नहीं करेंगे," लोमड़ी ने कहा, "पर इसमें तुम्हारा ही नुकसान है।"

"हाँ, तुम्हारा ही नुकसान है," बिल्ला बुदबुदाया।

"तुम अपना भला ख़ुद नहीं चाहते," लोमड़ी ने कहा।

"तुम अपना भला खुद नहीं चाहते," बिल्ले ने हाँ में हाँ मिलाई।

"नहीं तो तुम्हारे सोने के पाँच सिक्के दौलत के ढेर बन जाते...."

बुरातीनो ठहर गया। मुँह फाड़कर बोला, "झूठ है!"

लोमड़ी अपनी दुम पर टिककर बैठ गई, होंठों पर जीभ फेरकर बोली, "मैं तुम्हें अभी सब कुछ समझाए देती हूँ। मूरखनगरी में एक जादुई मैदान है। उसे चमत्कारों का मैदान कहते हैं ... वहाँ गड्ढा खोदो, फिर तीन बार बोलो, 'अन्तर, मन्तर, छूमन्तर'। बस, यह कहकर सोने के सिक्कों को गाड़ दो, फिर उन्हें मिट्टी से ढँक दो, ऊपर से नमक डाल दो, अच्छी तरह सींच दो और घर जाकर सो जाओ। सुबह उस गड्ढे में से एक छोटा सा पेड़ निकल आएगा, उस पर पत्तियों की जगह सोने के सिक्के लटक रहे होंगे। समझ गए न?"

बुरातीनो उछल पड़ा, "झूठ कहती हो!"

"चलो, चलते हैं, बज़ीलिओ," गुस्से से नाक सिकोड़ते हुए लोमड़ी ने कहा, "हम पर विश्वास नहीं, तो रहने दो ..."

"नहीं, नहीं," बुरातीनो चिल्लाया, "मुझे विश्वास है, यक़ीन है! चलो झटपट, मूरखनगरी ही चलते हैं!"

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी-क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार। लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय, सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन)

माथापच्ची : हल अगस्त, 96 अंक के

1. 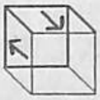

2. बिल्लो ने कुल सोलह अम्बियाँ तोड़ी थीं।

3. मैं घर से अपने दादाजी की घड़ी में चाबी भरकर निकला। दोस्त के घर पहुँचते ही मैंने उसकी घड़ी देखी। तब हुए थे सुबह के 8 बजकर 32 मिनट। फिर चाय पीकर और थोड़ी गपशप करके वापस निकलते हुए मैंने फिर उसकी घड़ी देखी। तब हुए थे 8 बजकर 50 मिनट। फिर मैं उसी रफ़्तार से चलता हुआ वापस अपने घर पहुँचा। चूँकि मैंने दादाजी की घड़ी को चालू करके छोड़ दिया था, इसलिए मुझे पता चल गया कि मेरे घर से निकलने और वापस आने के बीच आधा घण्टा (30 मिनट) बीत चुकाथा। इसमें से 18 मिनट (8.32 से 8.50 तक) तो मैंने दोस्त के घर गुज़ारे थे। मतलब आने-जाने में कुल समय लगा (30 - 18) 12 मिनट का। यानी एक तरफ चलने में मुझे 6 मिनट लगे थे। और दोस्त के घर से निकलते हुए मैंने देखा था कि उसकी घड़ी 8.50 बजा रही थी। इसलिए घर लौटकर जल्दी से यह सब माथापच्ची करके मैंने घड़ी के काँटे 8 बजकर 56 मिनट पर कर दिए।

4. कुछ भी नहीं। फर्क शून्य का जो है!

6. शतरंज की बिसात में कुल मिलाकर 204 अलग-अलग नाप के वर्ग होते हैं।

7. 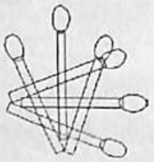

वर्ग पहेली 60 का हल

1 हो	लि	2 का	■	■	3 या	4 या	व	5 र
शि	■	6 फू	ट	7 ना	■	त	■	वि
8 या	व	री	■	य	■	9 ना	10 खु	श
र	■	■	11 वि	र	12 ल	■	ला	■
■	13 म	ग	रा	■	14 त	र	सा	■
■	ध्य	■	15 ग	16 ज	र	■	■	17 अ
18 अ	म	19 ल	■	र्ज	■	20 अ	ना	र
सी	■	गा	■	21 र	ई	स	■	मा
22 म	स	न	द	■	■	23 ह	सी	न

वर्ग पहेली - 60 का सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठकों के नाम हैं - अफ्शाँ बानो, सहदेवनगर, राजनांदगाँव और मुकेश बड़गैयाँ, पथरिया, दमोह (दोनों म. प्र.), और अंशुमान अग्रवाल, बावल, रेवाड़ी, हरियाणा। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।

टिटहरी छत पर

यूँ तो हमारे आस-पास चहचहाती चिड़ियों की आवाज़ें हम सुनते रहते हैं, उन्हें फुदकते देखते हैं और भूल जाते हैं। पर इन्दौर के विपुल कीर्ति ने अपने कौतुहल के चलते एक दुर्लभ घटना को सिलसिलेवार देखा और लिख भेजा। घटना है टिटहरी द्वारा छत पर अण्डे देने और उन्हें सेने की। तुम भी पढ़ो।

शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति हो जिसको जीवन में कभी न कभी चिड़ियों ने आकर्षित न किया हो। कुछ लोग अपना शौक मिट्ठू या फिर लव-बर्ड पालकर पूरा करते हैं। बच्चे रंग-बिरंगे पक्षियों के पंख अपनी कॉपी-किताबों में सम्भालकर रखते हैं। कभी इन पक्षियों को देखकर ही मनुष्य ने आकाश में उड़ान का प्रयास किया था। कोई आश्चर्य नहीं कि इस शौक में व्यक्ति खाना-पीना भी भूल जाए। इसी शौक ने सलीम को एक विख्यात पक्षीविद् डॉ. सलीम अली बनाया था। उनके पक्षी प्रेम को देखकर यहाँ तक कहा जाता है कि डॉ. सलीम अली का घरौंदा हर पक्षी को पता था।

गर्मी का समय बहुत से पक्षियों का प्रजनन काल होता है। गर्मी के अन्त तक चूज़े अण्डों से बाहर आ जाते हैं। बरसात में पैदा हुए ढेर सारे कीट-पतंगे उनके खाने की समस्या हल कर देते हैं।

रक्तलाल चोंच और लम्बे पैरों वाली तथा कबूतर से थोड़ी-सी बड़ी "टिटहरी" का नाम शायद तुमने सुन रखा होगा। तालाबों के आसपास के मैदानों में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए इन्हें देखकर बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है। ये अपना घोंसला घास-फूस में न बनाकर ज़मीन में छोटे-छोटे गड्ढों में व ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर बनाती हैं। मार्च में मैंने एक टिटहरी को अपने सामने वाले मकान की छत पर बैठे हुए देखा। सामान्य बात समझकर मैंने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। पर कुछ दिनों बाद मेरा ध्यान फिर वहीं पर गया। मैंने मादा टिटहरी को उसी स्थान पर अण्डों को सेते समय बैठने वाली स्थिति में देखा। मैंने आव देखा न ताव और सीधे सामने वाले दुमंज़िले की छत पर जैसे-तैसे जा चढ़ा। टिटहरी तो तुरन्त उड़ भागी पर टिटहरी के बैठने वाले स्थान पर सीमेन्ट और बालू रेती के छोटे-छोटे पत्थरों से बनाया हुआ घेरा दिखा। वह टिटहरी का खाली घोंसला था। अण्डे देने की तैयारी पूरी हो गई थी। बया और दर्जिन चिड़िया के ख़ूबसूरती से बनाए गए घोंसलों को देखने के बाद टिटहरी घोंसला बनाने में फिसड्डी लग रही थी। जब मुझे घोंसले में अण्डे नहीं मिले तो बड़ी निराशा हुई। मुझे लग रहा था अब टिटहरी यहाँ पर अण्डे नहीं देगी। पर लगभग पन्द्रह-बीस दिनों के बाद टिटहरी ने तीन अण्डे दिए। अण्डे आकार में मुर्गी के अण्डे से छोटे थे। पर सफ़ेद न होते हुए क्रीम रंग पर भूरे रंग के छींटेदार थे। सीमेन्ट और रेत के छोटे-छोटे पत्थर और ईंट के टुकड़ों से इतने मेल खाते थे कि बताने पर भी पहचानना कठिन होता था। अट्ठाइस

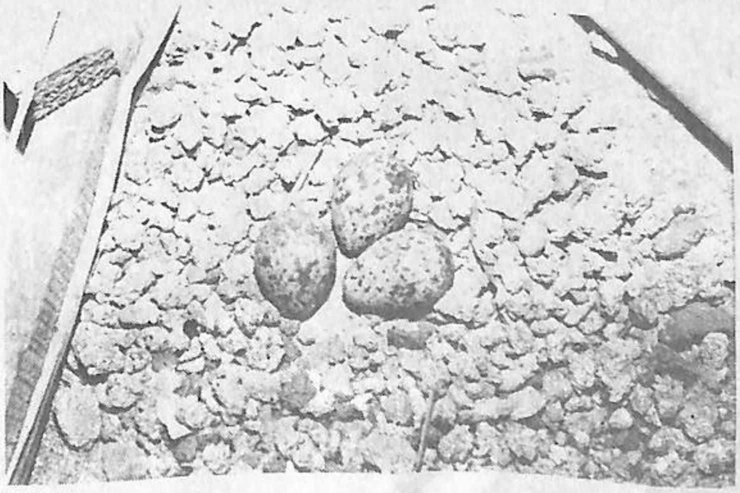

दिनों तक लगातार मादा टिटहरी अण्डों को सेती रही। बीच में दो बार कुछ देर के लिए मूसलाधार बरसात हुई पर बरसात में भी मादा अण्डों की रक्षा में बैठी रही।

मादा व नर के अलावा कुछ और टिटहरियाँ भी आगन्तुक को देखने के लिए आया करती थीं। घोंसले के लिए छत बहुत सोच-समझकर चुनी गई लगती थी। आसपास के इलाके में उस छत को छोड़कर ऐसा कोई घर नहीं था जिसकी छत पर चढ़ा नहीं जा सके। एक दिन तो बिल्ली ने भी चूज़ों के शिकार की कोशिश की थी। मगर उन तक पहुँचना शेर की मौसी के बस की भी बात नहीं थी। ख़तरे को भाँपकर नर व मादा दोनों ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते थे। शोर सुनकर आसपास से एक-दो और टिटहरियाँ आ जातीं थी। मैं जैसे ही छत पर ड्रम और फिर सीढ़ी लगाकर चढ़ता वे मेरे आसपास मंडराने लगती थीं। पर कभी भी आक्रमण नहीं करती थीं।

अट्ठाइस-तीस दिनों के बाद दो अण्डों में से चूज़े निकले। एक दिन के चूज़े भी इतने शैतान होते होंगे मैं सोच भी नहीं सकता था। सामान्य अवस्था में जब टिटहरी तालाब के पास मैदान में बच्चे पालती है तो कोई चिन्ता की बात नहीं रहती है। बच्चे कहीं भी दौड़ें जगह की कमी नहीं और ऊपर से गिरने का ख़तरा भी नहीं। लेकिन छत पर शैतान बच्चों के कारण नर-मादा दोनों की हालत पतली रहती थी। सुबह सात से लेकर दस बजे तक का समय दोनों के लिए बड़ा मुश्किल वाला होता था क्योंकि छत पर मुँडेर नहीं थी। एक ईंट ऊँची दीवार पर चढ़कर चूज़े नीचे झाँका करते थे। चिन्ता में नर और मादा छत से बिल्कुल नीचे ज़मीन पर भागा-दौड़ी करते थे। अगर नर बच्चों के साथ रहता तो मादा नीचे रहती थी और मादा ऊपर रहती थी तो नर नीचे। माता या पिता को नीचे देखकर चूज़े भी छत से नीचे आने की कोशिश करते थे।

और फिर एक दिन वही हुआ जिसका डर था। चार दिन के एक चूज़े ने छत से छलाँग लगा दी। ग़नीमत थी कि चूज़ा सीधे घर के पीछे की कच्ची नाली में जा गिरा। सामने बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। अचानक गेंद वहीं पर आ गई जहाँ चूज़ा गिरा था। गेंद लेने के लिए आया लड़का गिरे चूज़े को चूहा समझा। बाद में पता पड़ने पर चूज़े को छत पर पहुँचाया गया। अगले दिन सुबह वही भागा दौड़ी चालू हो गई। अब तो चूज़ों के साथ मस्ती करने के लिए एक और चूज़ा था, जो अण्डे से निकल आया था। एक दिन के बाद दो चूज़ों ने छत से उड़ान भरने की चाह में छलाँग लगा दी। दोनों चूज़े मर गए। मैदान के बजाय छत पर अण्डे देकर बच्चे को पालने का प्रयोग असफल रहा।

डॉ. सलीम अली की पक्षियों पर लिखी किताब में छानबीन करने पर पता पड़ा कि दिल्ली में भी एक ऐसी घटना देखने में आई थी जिसमें टिटहरी ने छत पर अण्डे दिए थे। टिटहरी का एक और ऐसा ही प्रयोग मेरे घर से कुछ ही दूर एक सुरक्षित छत पर चल रहा है। शायद इस बार चूज़े सफल उड़ान भरें।

लेख एवं छायाचित्र : विपुल कीर्ति

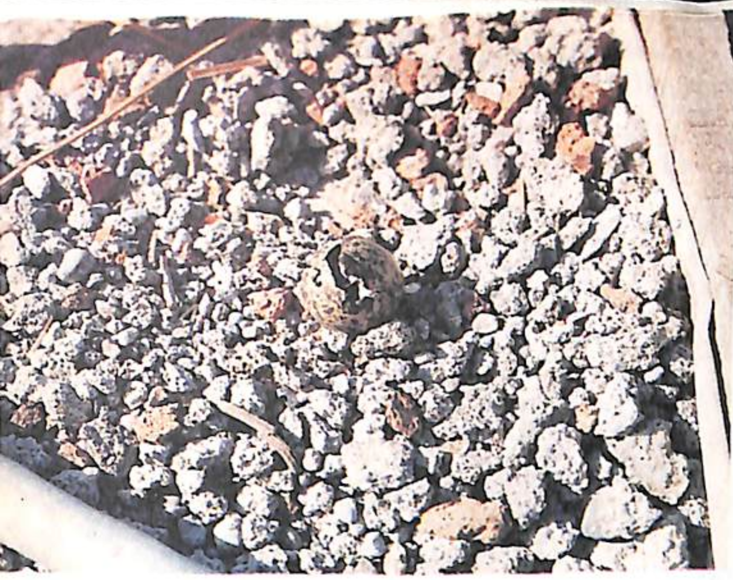

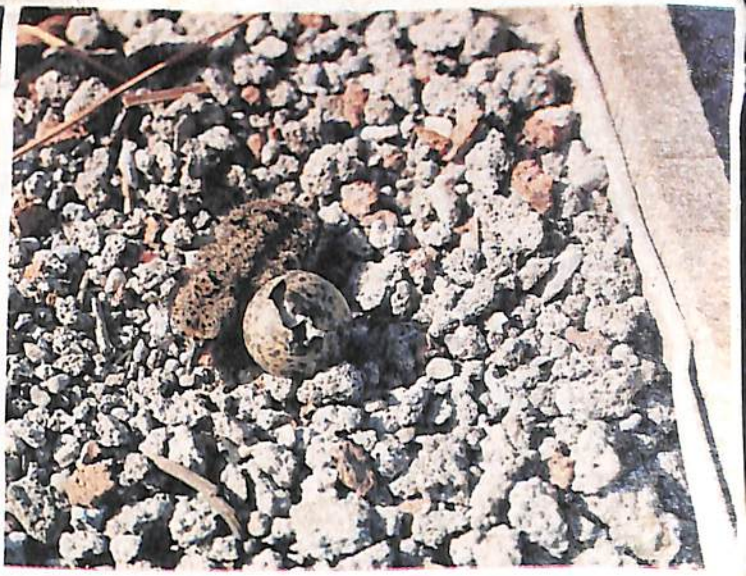

(ऊपर बाएँ) तीस दिन तक अण्डे में रहने के बाद अण्डे से झाँकता टिटहरी शिशु।

(ऊपर दाएँ) अण्डे से बाहर निकला टिटहरी शिशु।

(नीचे) टिटहरी का एक दिन का बच्चा।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96

निकिता डहरवाल, पाँच वर्ष, भिलाई (म.प्र.)

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना